आख़िरत की जानिब

फ़िक्रे आख़िरत

हदीस :
आख़िरत की
एक घड़ी की
ग़ौर व फ़िक्र
साल भर की
इबादत से
बेहतर है
(मुकाशफतुल क़ुलूब)

दुनिया
क़ब्र
जहन्नम
जन्नत

पार्ट - 1

अहले सुन्नत व जमात

मिनजानिबः
रज़वी टीम, इण्डिया

मुसन्निफ
अनवर रज़ा खान अज़हरी

हम्द व सना

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

ऐ अल्लाह, तेरी जात बेमिस्ल व यकता है, तू हमेशा से है, हमेशा रहेगा। तू एक है, पाक है, तू ही इबादत के लायक है। तू ही सारी चीजों को बनाने वाला है। तू ही सारे जहां का रब है। या अल्लाह तू मेरा खुदा, मैं तेरा बंदा, तूने मुझे इबादत के लिए बनाया और कुरआन मेरे हिदायत के लिए उतारा, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तरीका ए सुन्नत के लिए भेजा, वलियों का सिलसिला निसबत और मोहब्बत के लिए कयामत तक जारी रखा ताकि मैं कुरआन से हिदायत पाऊँ, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुन्नतको अपनाऊं और वलियों से निसबत और मोहब्बत करने वाला बन जाऊं, ऐ मेरे रब तेरा एहसाने अज़ीम है की आदम अलैहिस्लाम को अपने कुदरत वाले हाथ से बनाया और उनकी औलाद हमे बनाया

और सबसे बड़ा एहसान ये है कि जिस हबीब को तूने अपने नूर की तजल्ली से बनाया उसका उम्मती हमे बनाया यानी अशरफुल मखलुकात बनाया और शुक्र है तेरी सारी नेमतों का जिसे मैं शुमार नहीं कर सकता। या अल्लाह तुझ से अज़ीम कोई नही ।

दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनाहगार उम्मतियों का नबी बनाया दरूद व सलाम हो उस नबी के आल पर जिस का सिलसिला तूने कयामत तक जारी रखा, और सलामती हो उन तमाम मोमिनो मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।

फेहरिस्त

दुनिया क्या है (दुनिया की हक़ीक़त)

पेशे लफ्ज़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वक्त और सेहत : हम जानते हैं कि दुनियां आख़िरत की खेती है। हम इस ज़िन्दगी में अपने अमल से जो बोएंगे वही आख़िरत में काटेंगे। अगर हमने इस मुख़्तसर ज़िन्दगी में अपने किमती वक़्त की क़द्र करते हुए इसे नेकी के कामों में लगाया तो क़यामत में इसका फल कामयाबी और जन्नत की सूरत में मिलेगा और कहा जाएगाः ''खूब लुत्फ़ अंदोज़ी से खाओ और पियो, उन आमाल के बदले में जो तुम गुज़िश्ता अय्याम में आगे भेज चुके थे''।(अल हाक़्क़ह) इसके बर अक्स अगर हम इस ज़िन्दगी में वक़्त की क़द्र नहीं करेंगे और इसे ग़फ़लत और सुस्ती के साथ अल्लाह और रसूलﷺ की नाफरमानी में गुज़ारेंगे तो रौज़े महशर मायूसी और नदामत का सामना करना पड़ेगा।

अल्लाह फरमाता हैः **''क्या हमने तुम्हे इतनी उम्र नहीं दी थी कि उसमें जो शख़्स नसीहत हासिल करना चाहता वो सोच सकता था, और तुम्हारे पास डर सुनाने वाला भी आ चुका था, पस अब अज़ाब का मज़ा चखो''।** (सुरहः फ़ातिर, आयत न)

अल्लाह फरमाता हैः **जब अपनी जवानी को पहुँचा और पूरे जोर पर आया हमने उसे हुक्म और इल्म अता फ़रमाया हम ऐसा ही सिला देते हैं नेको को** *(सूरा कसस़, आयत 14.)*

अल्लाह फरमाता है**: अल्लाह है जिस ने तुम्हें इब्तिदा में कमज़ोर बनाया फिर तुम्हें नातवानी से ताक़त यानी जवानी बख्शी फिर कूव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया बनाता है जो चाहे और वही इल्म व कुदरत वाला है** *(सूरा रूम, आयत 54.)*

सरकारे दो आलमﷺ का इरशाद है,''दो ने'मतों के बारे में अकसर लोग नुकसान में रहते हैंः सेहत और फ़राग़त'' (बुख़ारी)। यानी अकसर लोग सेहत और वक़्त जैसी अज़ीम ने'मतों की नाक़दरी की वजह से नुकसान में रहेंगे। रौज़े क़यामत इंसान वक़्त के मुताल्लिक़ अल्लाह त'आला की बारगाह में जवाब देह होगा। उससे पूछा जाएगा, ''उम्र कैसे गुज़ारी और जवानी किन कामों में ख़र्च की''(तिर्मिज़ी)।

आज का मुआशरा

बहुत अफ़सोस के साथ लिखना पड़ रहा है, आज मुसलमानों के हालात हमारे सामने है, मुसलमानों के मौजूदा हालात जानने के लिए दूर जाने की जरूरत नही है आप अपने घर मे देख ले आप अपने वालिदैन, भाई, बहन, औलाद, रिश्तेदार, दोस्त, यार, पड़ोसी, गांव, शहर, देश बल्कि पूरे दुनिया मे देख लें सब के सब अल्लाह व रसूल का नाफरमानी करते नज़र आ रहे है(इल्ला माशा अल्लाह), इस्लाम के खिलाफ ज़िन्दगी गुज़ारते नजर आ रहे है, इबादत को छोड़ कर दौलत के पीछे भाग रहे हैं , सुन्नत को छोड़ कर शोहरत को अपनाए हुये हैं, खाना पीना सुन्नत के खिलाफ, लिवास सुन्नत के खिलाफ, शादी निकाह सुन्नत के खिलाफ, रहन सहन सुन्नत के ख़िलाफ़ यहाँ तक कि गुनाहों कि हदे पार कर दिए है और गुनाहों में भी एक दूसरे से आगे बढ़ रहे है। यानी कि दुनिया के लिए ही जिदगी जी रहे है और अपना असल ठिकाना आख़िरत को भूल गए है।

जबकि अल्लाह फरमाता है कुरआन में : **तुम दुनिया और आख़रित के काम सोच कर करो** (सुरह बक़रह, आयत न. 220)

नसीहत : आज के बाद फैसला कर ले मुसलमान कि जो काम करूँगा वो सिर्फ और सिर्फ आख़िरत में बदला पाने के नियत से यानी अल्लाह व रसूल की रज़ा के लिए करूँगा दुनियावी ऐशो आराम (फैसिलिटी) के लिए नही।

अल्लाह फ़रमाता है : **जो दुनियाँ की ज़िन्दगी और उसकी आराइश चाहता है हम उसे दुनियाँ में पूरा फल देंगे और कुछ भी कमी न करेंगे लेकिन आखिरत में उनका कोई हिस्सा नहीं होगा और उनके लिये आग (जहन्नम) है और उनके आमाल जो वहाँ (दुनिया मे) करते थे सब अकारत (बर्बाद) गये।**
(सुरह हूद, आयत न. 15-16)

नसीहत : ऐ बन्दे अल्लाह से डर, दुनिया से दूर भाग, दुनिया का कनेक्शन जहन्नम से है, ये दुनिया मोमिन के लिए नही काफिर के लिए आराइश (फैसिलिटी) की जगह है । **फरमाने नबी ﷺ है : दुनिया मोमिन के लिए क़ैदखाना और काफिर के लिए जन्नत है।** (सही मुस्लिम)

ईमानी अक़वाल

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि जिस शख़्स में छः आदतें पाई जाती है वह नारे जहन्नम (जहन्नम की आग) से दूर और जन्नत का तालिब है-

(1) अल्लाह को पहचान कर उस की इबादत की।

(2) शैतान को पहचान कर उस की मुखालिफत की।

(3) हक़ को पहचान कर उस की इत्तेबा की।

(4) बातिल को पहचान कर उस से परहेज़ किया।

(5) दुनिया को पहचान कर उसे तर्क कर दिया, और

(6) आख़िरत को पहचान कर उस का तलबगार रहा।

(मुकाशफतुल, बाब न. 32, पेज, 196)

किसी ने खूब कहा है:

लिबासे ख़िज़्र में यहां सैंकड़ों रहज़न भी फिरते हैं!

अगर जीने की चाहत है तो कुछ पहचान पैदा कर!!

नसीहत : अगर 2000 का नकली नोट कोई आपको दे और आप असली और नकली की पहचान नही कर पाते हैं, फिर किसी दुकान पर जाकर उस नकली पैसे के बदले कुछ लेना चाहें तो दुकानदार नहीं देगा, बोलेगा असली पैसा दो। फिर आपको खाली हाथ लौटना पड़ेगा। ठीक इसी तरह उपर जो 6 बातें लिखी गयीं है उन्हें पहचाने बगैर कोई काम करने से गुमराह होना मुमकिन है, और गुमराह की इबादत बेकार।

पहचानने के लिये कुरआन और हदीस का ईल्म होना शर्त है

दीनी ईल्म की अहमियत

दीनी ईल्म रौशनी की तरह है और जहालत अंधेरी की तरह है हम किसी चीज को तभी पहचान सकते है जब उसे रोशनी में देखे अगर अंधेरी में देखेंगे तो उसे पहचानना नामुमकिन है ठीक उसी तरह अगर हमको अपना अल्लाह को पहचानना हो या अपना दुश्मन शैतान को पहचानना हो, या हक़ और बातिल, दुनिया और आख़िरत को पहचानना हो तो इल्मे दीन का होना शर्त है बिना इल्मे दीन का मुसलमान जहालत के अंधेरीयो में गुमराह रहता है और गुनाहो से नही बच पाता ।

दुनियावी इल्म से नुकसान:

याद रखे दुनियावी इल्म यानी स्कूल और कॉलेजों से चाहे कितना भी हासिल कर ले वो सिर्फ दुनिया कमाने के लिए है जो मोमिन के लिए बहुत नुकसान दायक है इससे आख़िरत में कोई फायदा नही, जिसने भी दुनियावी ईल्म हासिल किया समझ ले वो अपना कीमती वक़्त बर्बाद किया जो वक़्त अल्लाह दीनी इल्म के लिए अता किया था । दुनियावी इल्म हासिल करके मुसलमान नाफरमान बन जाता है बेकार पड़े हुवे है क्योंकि नाफ़रमानो के साथ अल्लाह का मदद नही। गहराइ से सोचो दुनियावी इल्म इसीलिये हासील कीये थे न की नौकरी मिल जाये लेकिन नही मीला तो दुनियावी इल्म से अल्लाह कैसे मीलेगा। अब भी वक्त है दीनी ईल्म हासील करने में लग जा अपना किमती वक्त न बर्बाद कर।

इल्म की 2 किस्मे है

1. इल्मे शरीयत (जाहरी इल्म) : किताबो या आलिमो के जरिये इस्लामी कानून और आमाल करने का तरीका को जान लेना इल्मे शरीयत है, जैसे- रोजा, नमाज, हज़, जकात, जिक्र ,दरूद, कुरान, हदीस का इल्म वगै़रह ये इल्म कम या ज्यादा हर खास व अवाम के पास है। जैसे मौलवी, कारी, हाफ़िज़, आबिद, अवाम ये जाहरी इल्म के अलीम है। इसमे अक्सर लोग दुनियादार के फेहरिस्त में होते है क्योंकि ये हक़ीकत को नही जान पाने के वजह से अल्लाह से नही डरते है और

गुनाह से नही बच पाते क्योंकि ज़ाहिरी इल्म वाले को शैतान लालच , शोहरत और दुनिया की मोहब्बत उसके दिल मे डाल कर गुमराह कर देता है आज मुआशरे का हाल देख ले।

2. इल्मे हक़ीक़त (बातिनी इल्म): ये वो इल्म है जिसके जरिए इंसान अल्लाह को पहचान कर इबादत करता है, शैतान को पहचान कर उसका मुखालफत करता , हक़, बातिल, हराम, हलाल, दुनिया, आख़िरत और अपने आप को पहचान लेता है और गुनाहो से बचाकर सच्ची तौबा कर लेता है। किसी बुजुर्ग का कौल है इल्मे हक़ीक़त एक राज है जिसे अल्लाह अपने परहेजगार बंदों को अता करता है ये इल्म सिर्फ अल्लाह के नेक बंदों के पास होता है जो परहेजगारी और फकीरी से हासिल किया जाता है। जैसे अंबिया, औलिया, सूफिया, मोहदीस, मुफ़स्सिर, मुजद्दीद ये बातिनी इल्म के उल्मा है।ये लोग दीनदारी के फेहरिस्त में होते है।

क्योंकि ये हक़ीक़त जानने के बुनियाद पर अल्लाह से डरते है और गुनाह से बचते रहते है।

किसी गुजुर्ग का कौल है जाहिरी इल्म छिलका है और बातिनी इल्म गुद्दा है छिलका फेक दिया जाता है और गुद्दा को खाया जाता है यानी इंसान का जहरी जो जबानी इल्म है वो छिलका है और बातिनी इल्म जो कल्बी (दिल से अखलास) गुद्दा है यानी जबानी का कोई अहमियत नही दिल और जिस्म से होना चाहिए।

अक्सर देखा होगा लोग बोलते इस्लाम के मुताबिक है लेकिन करते इस्लाम के खिलाफ है। इसकी वजह यही है कि उसके पास सिर्फ जाहरी इल्म यानी छिलका है।

इल्मे हक़ीक़त (बातिनी इल्म) कैसे हासिल करें

बातिनी इल्म हासिल करने के लिए अपको दुनियदारी से दूरी बनाना होगा, अल्लाह वालो के निसबत में रहना होगा, गुनाहों से बचना होगा, सुन्नत अपनाना होगा, दाढ़ी रखना होगा, रियाकारी, शोहरत, लालच, दौलत, खुदपसन्दी से नफरत करना होगा, लोगो को नेकी का हुक्म देना और गुनाहो से रोकना होगा।

नोटः उपर की 6 बातों पर अमल करके जन्नत का हकदार होना चाहते है तो इल्मे

हक़ीक़त (बातिनी इल्म) हासिल करें।

कुरआन में है : **अल्लाह से उसके बन्दों में वही बन्दे डरते हैं जो इल्म वाले हैं** ***(सुरह: फातिर, आयत न 28)***

इस आयात में इल्म से मुराद यही इल्मे हक़ीक़त (बातिनी इल्म) है वरना इल्म तो आपके पास भी है सभी जानते है नमाज पढना चहिये लेकिन नही पढ़ते है, इल्म है दाढ़ी रखना चाहिए लेकिन नही रखते, जाहिरी इल्म है झूठ नही बोलना चाहिए फिर भी बोलते है, इल्म है फिर भी दीन के नाम पर दुनिया कमा रहे है, यानी इल्म होने के बावजूद अल्लाह से नही डरते जबकि कुरान में है इल्म वाले अल्लाह से डरते है अब आप समझ गए होंगे कि इल्म की 2 किस्मे है

मुसलमानों के जहालत से शैतान सबसे ज्यादा खुश होता है

हिकायत : एक रोज़ अस्र के बाद शैतान ने अपना तख्त बिछाया, और शयातीन ने अपनी अपनी कार गुज़ारी की रिपोर्ट पेश करना शुरू की किसी ने कहा कि मैंने इतनी शराब पिलाई, किसी ने कहा मैंने इतने ज़िना कराए, शैतान ने सब की सुनी, एक ने कहा कि मैने एक तालिबे इल्म को पढ़ने से बाज़ रखा, शैतान सुनते ही तख़्त पर से उछल पड़ा और उस को गले से लगा लिया और कहा, "अन् त तूने काम किया तूने काम किया, दूसरे शयातीन यह कैफियत देख कर जल गए कि उन्होंने इतने बड़े काम किये, उन पर तो शैतान खुश नहीं हुआ और इस मअमूली से काम करने वाले पर इतना खुश हो गया। शैतान बोला तुम्हें नहीं मलूम जो कुछ तुमने किया सब इसी का सदक़ा है उन्हें इल्म होता तो वह गुनाह नहीं करते, लो मैं तुम्हें दिखाता हूँ, वह कौनसी जगह है जहाँ सब से बड़ा आबिद रहता है मगर वह आलिम नहीं और वहाँ एक आलिम भी रहता हो तो उन्होंने एक मक़ाम का नाम लिया, सुबह को सूरज निकलने से पहले शयातीन को लिए हुए शैतान उस मकाम पर पहुँचा, शयातीन छुपे रहे और यह इन्सान की शक्ल बनकर रास्त में खड़ा हो गया, आबिद साहिब की नमाज़ तहज्जुद के बद फर्ज़ के वास्ते मस्जिद की तरफ तशरीफ लाए रास्ते में शैतान खड़ा था, अस्सलामु अलैकुम, व अलैकुम सलाम के बद कहा हज़रत मुझे एक मसला पूछना है आबिद साहिब ने जल्दी पूछों, मुझे नमाज़ के लिए मस्जिद में जाना है, शैतान ने जेब से एक छोटी सी शीशी निकाली और पूछा, क्या अल्लाह क़ादिर है कि उन सारे आसमानों और ज़मीनों को इस

छोटी सी शीशी में दाखिल करदे, आबिद साहिब ने सोचा और कहा कहाँ इतने बड़े आसमान और ज़मीन और कहाँ यह छोटी सी शीशी बोला बस यही पूछना था तश्रीफ़ ले जाईए और शयातीन से कहा, देखो मैंने इस की राह मार दी उसको अल्लाह की कुदरत पर ही ईमान नहीं इबादत किस काम की, फिर सूरज निकलने के क़रीब एक आलिम जल्दी जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए शैतान ने कहा अस्सलामु अलैकुम मुझे एक मसला पूछना है आलिम ने फ़रमाया, पूछो जल्द पूछो नमाज़ का वक़्त कम है, उसने शीशी दिखाकर वही सवाल किया, आलिम साहिब ने फ़रमाया मलऊन तू शैतान मालूम होता है, अरे वह क़ादिर है कि यह शीशी तो बहुत बड़ी है एक सुई के नाके के अंदर अगर चाहे तो करोड़ों आसमान व ज़मीन दाखिल करदे, "इन्नल्लाह अला कुल्लि शै इन क़दीर आलिम साहिब के तशरीफ़ ले जाने के बद शैतान ने शयातीन से कहा, देखा यह इल्म ही की बरकत है और वह जिसने इल्म हासिल करने वाले को पढ़ने से रोका उसने बहुत बड़ा काम किया ताकि वह न पढ़े और न आलिम बन सके। (मलफ़ूजाते आला हज़रत जि:3, स:21-22)

सबक: अब तो शैतान को खुश करने वाले न बनो दीन कि किताबो को पढो शैतान से इल्म के जरिये लड़ो, ईमान बचने के लिए दीन का इल्म बहुत बड़ी जरूरी और मुफीद चीज़ है, शैतान ऐसे इल्म वालो से बहुत डरता है क्यों कि इल्म वाले अपने इल्म की वजह से शैतान के जाल में नहीं फंसता, बिगैर इल्म के जुहद व इबादत भी ख़तरे में रहती है, खूद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है"फ़क़ीहुन वाहिदुन अशहु अल-शैतानि मिन-अल्फि आबिदिन" यअ़्नी शैतान पर एक आलिम हज़ार आबिद से भी ज़्यादा भारी है।"

आख़िरत क्या है?

आख़िरत हमारा रहने की आख़री जगह है वहीं चैन की जिन्दगी है जहाँ हमेशा रहना है। वहां मौत नहीं , जिस तदह आप इस दुनिया में एक जगह से दुसरे जगह सफर करते है , सफर के बाद जब आपना घरमें दाखिल होते है तो बहुत आराम महसूस करते है, चैन की नीद सोते है, खाते पीते है और बाकी जिन्दगी बसर कंरते है ठीक उसी तरह ये दुनिया में अभी सफर कर रहें है, सफर अगर कामयााब रहा तो अपना घर अखिरत में बहुत आराम से रहेंगे। इस सफर में 3 घाटियों से गुजरना

पड़ता है। 1. दुनिया और जो कुछ दुनिया में है यानी फानी सामान 2. शैतान और शैतान के लश्कर. 3. नफ्स और नफ्सानी ख्वाहिसात आगे पढ़े इन घाटियों का तफसील।

अल्लाह फरमाता है : **यह दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और बेशक आखिरत का घर ज़रूर वही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते** *(कंज़ुल ईमान, सुरह अनकबुत, आयत न. 64)*

इस आयात पर गौर व फ़िक्र : अल्लाह फ़रमा रहा है **''क्या अच्छा था अगर जानते''** मगर अफसोस आज हम हक़ीक़त कुछ नही जानते सिर्फ आख़िरत को भूल कर दौलत कमाना जानते है और सुन्नत के खिलाफ ज़िन्दगी गुजारना जानते है।

आख़िरत 3 हिस्सो में है 1. क़ब्र, 2. ज़न्नत, 3. जहन्नम क़यामत से पहले हिसाबों किताब से पहले तक इंसान क़ब्र में हि रहेगा, क़ब्र आख़िरत की पहली मंजिल है, जिस तरह इस दुनिया मे हम मोमिन, फ़ासिक़, मुनाफ़िक़ और काफिर एक साथ एक गांव, एक शहर, एक देश मे रहते है लेकिन आख़िरत में ऐसा नही, सिर्फ मोमीन मर्द और मोमीना औरत जन्नत में जायेगे।

मोमिन का क़ब्र में जन्नती बिस्तर बिछाया जाता है जिसमें वो आराम फरमाता , जन्नत की खिड़की खोल दी जाती है जिससे मोमिन सुकून हासिल करता है, जन्नती लिवास पहनाया जाता है जिससे मोमिन जन्नती नेएमतों का लुत्फ़ लेता रहता है। लेकिन गैर मोमिन के क़ब्र में जहन्नमी की खिड़की खोल दी जाती है, जहन्नमी आग का बिस्तर बिछाया जाता है और आग का लिवास पहनाया जाता है।

Note : Qabr ke Halat ka ilm Tafseel aur Daleel ke Sath hasil krne ke Liye ye Kitab Padhe ,"शरहुस्सुदूर"

हदीसे कुदसी 'तख्लीके जन्नत और जहन्नम'

हज़रते अबू हुरैरह रदिअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया जब अल्लाह त'आला ने जन्नत को तख़लीक़ फ़रमाया तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि जिब्राईल जाओ और जन्नत को देखो। जिब्राईल अलैहिस्सलाम गए और जन्नत देखी, फिर रब्बे करीम की बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज़ किया ऐ परवरदिगार! तेरी इज़्ज़त की क़सम जो भी इसके बारे में सुनेगा वोह इसमें दाख़िल हो जाएगा, फिर जन्नत को बाज़ मुश्किल आमाल से ढांप कर अल्लाह त'आला ने इरशाद फ़रमाया ऐ जिब्राईल जाओ और जन्नत को (दुबारा) देखो। जिब्राईल अलैहिस्सलाम गए और (दुबारा) जन्नत को देखा, फिर रब की बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज़ किया ऐ रब! तेरी इज़्ज़त की क़सम मुझे अंदेशा है कि इसमें कोई दाख़िल नही हो पाएगा।।

फिर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जब अल्लाह ने दोज़ख को तख़लीक़ फ़रमाया तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम से कहा ऐ जिब्राईल जाओ और दोज़ख को देखो। जिब्राईल अलैहिस्सलाम गए और दोज़ख देखी, फिर अपने रब की बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज़ किया ऐ परवरदिगार! तेरी इज़्ज़त की क़सम इसके बारे में जो भी सुनेगा वोह हरगिज़ इसमें दाख़िल न होगा, फिर अल्लाह तआला ने दोज़ख को बाज़ शहवानी नफसानी ख़ाहिशात से ढांप कर फ़रमाया कि जिब्राईल अब जाओ और दोज़ख को देखो, तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम गए और दोज़ख देखी, फिर अर्ज़ किया ऐ परवरदिगार! तेरी इज़्ज़त की क़सम मुझे अंदेशा है कि कोई ऐसा न बचेगा जो इसमें दाख़िल न हो। *(अबू दाउद, किताबुल सना, बाब फी खल्की जन्नत व नार)*

हिकायत:- हजरते यहया अलैहिस्सलाम ने एक रात जौ की रोटी पेट भर कर खा ली और इबादते इलाही में हाज़िर न हुए अल्लाह तआला ने वही की ऐ यहया! क्या तू ने इस दुनिया को आखिरत से बेहतर समझा है या मेरे जवारे रहमत से बेहतर तूने कोई और जवार पा लिया है। मुझे इज्जत व जलाल की कसम गर तू जन्नतुल फिरदौस का नजारा कर ले और जहन्नम को देख ले तो आंसूओं के बदले खून रोये और इस अच्छे लिबास की जगह लोहे का लिबास पहने। *(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 4, पेज 56)*

फ़िक्र - ए- आख़िरत

हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैह मुकाशिफतुल कुलूब में नक़्ल करते हैं कि मीज़ाने अमल और नामए आमाल के दाएं या बाएं हाथ में दिए जाने के बारे में ग़ौर करते रहना तुम्हारे लिए ज़रूरी है क्योंकि हिसाब के बाद लोगों की तीन जमाअतें होंगी, एक जमाअत वह होगी जिस की कोई नेकी नहीं होगी, तब से एक सियाह गर्दन नमूदार होगी जो उन्हें इस तरह उचक लेगी जैसे परिन्दा दाने उचक लेता है और उन्हें लपेट कर आग में डाल देगी और आग उन्हें निगल लेगी, फिर पुकार कर कहा जाएगा, इन की बद बखती दाईमी है और इन के लिए किसी भलाई की उम्मीद नहीं है, दूसरी जमाअत वह होगी जिस की कोई बुराई नहीं होगी, उस दिन आवाज आएगी कि हर हाल में अल्लाह की हम्द करने वाले खड़े हो जाएं, वह खड़े हो जाएंगे और निहायत इतमिनान से जन्नत में दाखिल होंगे, फिर रातों को इबादत करने वालों, तिजारत और खरीद व फरोख्त के सबब जिक्रे खुदा से न रुकने वालों को इसी तरह जन्नत में भेजा जाएगा और कहा जाएगा कि इन के लिए दाईमी सआदत है जिस के बाद कोई दुख तकलीफ नहीं है, तीसरी जमाअत वह होगी जिन के नामाए आमाल में नेकियां और गुनाह दोनों दर्ज होंगे लेकिन उन्हें ख़बर नहीं होगी, जब तक अल्लाह तआला अपनी रहमत और अपने ग़ज़ब का इज़हार फरमाए, उन लोगों के नामए आमाल में गुनाह और नेकियाँ लिपटी हुई होंगी, उन के आमाल मीज़ान किए जाएंगे और उन की आंखें नामए आमाल की तरफ होंगी कि कौन से हाथ में आता है और मीज़ान का पल्ला किधर झुकता है और यह ऐसी खौफनाक हालत होगी जिस से लोगों के होश उड़ जाएंगे।

फिक्रे आख़रित के मुतअल्लिक़ फ़रमाने मुस्तफा ﷺ

हुजूर नबिय्ये करीम ने खुत्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! यक़ीनन दुन्या तुम्हारे लिये जाए अमल है तो अपने आ'माल को ब खूबी पूरा करो । और तुम्हारा एक अन्जाम (मौत) है तो अपने अन्जाम की तैयारी करो । मुसल्मान दो ख़ौफ़ों के दरमियान रहता है (1) एक उस मुद्दत का ख़ौफ़ जो गुज़र चुकी, वोह नही जानता कि अल्लाह -१) ने उस के बारे में क्या फ़ैसला फ़रमाया है। और (2) दूसरे उस मुद्दत का ख़ौफ़ जो अभी बाक़ी है, वोह नही जानता कि अल्लाह उस के साथ क्या

मुआमला फ़रमाता है पस बन्दे को चाहिये कि में बुढ़ापा आने से क़ब्ल जवानी ही में आखिरत के लिये जादे राह इकठ्ठा कर ले, क्यूंकि तुम आख़िरत के लिये पैदा किये गए हो और दुन्या तुम्हारे लिये बनाई गई है, क़सम है उस जात की जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! मौत के बा'द (इबादत के लिये) थकने का कोई मौकअ नहीं और दुन्या के बाद जन्नत और दोज़ख़ के इलावा कोई घर नहीं मैं अल्लाह तआला से अपने और तुम्हारे लिये इस्तिफ़ार करता हूं।" (अल मर्जउस्साबिक, अल हदीसः 10571, स. 360)

जहन्नमियों की तादाद ज्यादा है

फरमाने नबी है कि कियामत के दिन अल्लाह तआला हज़रते आदम अलैहिस्सलाम को बुला कर फरमाएगा कि उठिए और जहन्नमियों को जहन्नम में भेज दीजिए। हज़रते आदम अलैहिस्सलाम पूछेंगे कि कितनों को जहन्नम में भेजूं? रब फरमाएगा कि हर हजार में से नौ सौ निन्नानवे (999) को भेज दीजिये।

ग़ौर व फ़िक्र :

ग़ौर और फ़िक्र का मतलब है समझने की कोशिश करना और हकीक़त को जानने के लिए अपने ज़ेहन को इस्तेमाल करते रहना।

अल्लाह फरमाता है : **बेशक ज़मीन व आसमान की पैदाइश और रात दिन के इख़्तिलाफ़ में अक्लमन्दों के लिए निशानियां हैं।**

फिर इरशाद फरमाया उस शख़्स पर अफसोस है जिस ने यह आयत पढ़ी और उस में गौर व फिक्र नहीं किया।

इमामे औज़ाई रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया कि इन आयात में गौर व फिक्र करने से क्या मुराद है? तो उन्हों ने जवाब दिया इन आयात को पढ़ो और फिर इन्हें समझने की कोशिश करो।

मुसलमानो सिर्फ कुरआन या हदीस या अक़वाल सिर्फ पढ़ कर मत आगे बढ़ो बल्कि ग़ौर व फ़िक्र करो।

जनाबे हसन रहमतुल्लाह अलैह का क़ौल है कि एक लम्हा का ग़ौर व फिक्र रात भर की इबादत से बेहतर है

हज़रते फुज़ैल का क़ौल है कि ग़ौर व फिक्र एक आइना है जो तुझे तेरी नेकियां और बुराईयां दिखाता है।

जनाबे इबराहीम रहमतुल्लाह अलैह से कहा गया कि आप बहुत ज्यादा ग़ौर व फिक्र करते हैं, उन्हों ने कहा कि ग़ौर व फिक्र अक़्ल का मग़ज़ है।

जनाबे सुफियान बिन उयैनह रहमतुल्लाह अलैह शायर के इस शेअर को अक्सर पेश किया करते थे:

जब आदमी में गौर व फिक्र करने का आदत हो तो उसे हर चीज़ में इबरतें नज़र आती हैं।*(मुकाशिफतुल कुलूब, बाब 43)*

गुजरी हुई जिन्दगी पर गौर व फिक्र:

तफ़सीर अबिल्लैस रहमतुल्लाह अलैह में है, जब कोई बन्दा आखिरत की चाहत की वजह से अपनी गुजरी हुई जिन्दगी पर गौर व फिक्र करता है तो यह फिक्र करना उस के दिल के लिए गुस्ल का काम देता है जैसा कि फरमाने नबवी है, एक घड़ी का ग़ौर व फ़िक्र साल भर की इबादत से बेहतर है। लिहाजा हर अकलमन्द के लिए जरूरी है कि अपने पिछले गुनाहों की मगफिरत तलब करे जिन चीजों का इकरार करता है उन में तफ़क्कुर (ग़ौर व फ़िक्र) करे और कियामत के दिन के लिए तोशा बनाये उम्मीदों को कम करे, तौबा में जल्दी करे, अल्लाह तआला का जिक्र करता रहे, हराम चीजो से बचे और नफ्स को सब्र पर आमादा करे। नफ्स की ख्वाहिशों की पैरवी न करे क्योंकि नफ्स एक बुत की तरह है जो नफ्स की पैरवी करता है वह गोया बुत की इबादत करता है और जो इख्लास से अल्लाह की इबादत करता है, वह अपने नफ्स पर जब्र करता है।

(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 4, पेज 52)

ज़िन्दगी का असल मक़सद

अल्लाह फरमाता है: **तर्जमा : वह (अल्लाह) जिसने मौत और ज़िन्दगी पैदा की कि तुम्हारी जांच हो तुम में किस का काम ज़्यादा अच्छा है और वही इज़्ज़त वाला बख्शिश वाला है***(कंजुल ईमान, सुरह मुल्क, आयत न. 2)*

इस फ़रमान से पता चलता है कि अल्लाह ने हमें ये क़ीमती ज़िन्दगी दौलत कमाने, खाने-पीने, और मौज मस्ती के लिए नहीं दी है बल्कि आज़माने के लिए अता की है इसलिए हमें चाहिए कि आज़माइश में कामयाब होने के लिए नेक काम में मसरूफ रहें।

अल्लाह फरमाता है : **मैंने जिन्न और इंसान को इतने ही के लिये बनाए कि मेरी बन्दगी (इबादत) करें***(कंजुल ईमान, सुरह जरियात, आयत न. 56)*

ग़ौर व फ़िक्र : इस आयात अब पता चलता है कि इंसान को दौलत कमाने के लिए नही बनाया गया और न ही खेल खुद न हो मनोरंजन करने के लिए बनाया बल्कि अल्लाह कपनी इबादत के लिए बनाया तो बन्दा को चाहिए इबादत में लग जाये ।

अल्लाह फरमाता है : तो क्या यह समझते हो कि हमने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं (सुरह: मोमिनून, आयत 115)

नसीहत : देख ले मुसलमान जब अल्लाह तुम्हे बेकार नही बनाया तो अपनी ज़िदगी मे बेकार की बाते क्यो करते हो, बेकार की की सामान क्यो इस्तेमाल करते हो, बेकार वक़्त क्यो बर्बाद करते हो, बेकार पैसा क्यों खर्च करते हों, बेकार ख़्वाहिशात क्यों अपनाते हो तौबा करले मुसलमान इसी दुनिया मे जीते जिदगी

अल्लाह फरमाता है: **तर्जुमा- ऐ मुसलमान अल्लाह के उतारे पर (कुरआन के मुताबिक) हुक्म कर और उनकी (शैतानी) ख़्वाहिशों पर न चल और उनसे (शैतान से) बचता रह कि कहीं तुझे लग़ज़िश (डगमगा) न दे दें** *(कंजुल ईमान, सुरह माएदा, आयत न. 49)*

नसीहत : देख मुसलमान अल्लाह तुझे बचाना चाहता है , शैतानी ख्वाहिशात पर चलने से रोक रहा है , बेशक अल्लाह बहुत मेहरबान है लेकिन बन्दा बहुत

नाफ़रमान है, क्या तू अब भी नाफरमानी करना नही छोड़ेगा, याद कर अपनी ज़िन्दगी का असल मक़सद यांनी अल्लाह की इबादत और शैतान की मुख़ालिफ़त।

आज़माइशे ज़िन्दगी

आजमाइश का मतलब : आजमाइश महज़ आजमाइश ही नहीं होती बल्कि अपने अन्दर बड़े ज़बरदस्त दीनी फवाइद भी रखती है। जुबानी दावे का इस्लाम में कोइ अहमियत नही। जबान से बोलने से कोइ मोमिन नही बनता बल्कि सच्चा मोमिन तब बनता है जब जबान के साथ जिस्म और दिल को भी अल्लाह के राह में खर्च करे। जो चीज़ मुनाफिकों को अहले ईमान की बरगुज़ीदा जमाअत से जुदा करती और सच्चों और झूठों के दरमयान फर्क कर देती है वह आज़माइश ही है।

अल्लाह फ़रमाता : क्या लोग इस घमण्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिए जाएंगे कि कहें हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश न होगी। (सूरः अंकबूत, आयत न 1)

अल्लाह फ़रमाता :बेशक ज़रूर तुम्हारी आज़माइश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में और बेशक ज़रूर तुम अगले किताब वालों और मुश्रिकों से बहुत कुछ बुरा सुनोगे और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो तो यह बड़ी हिम्मत का काम है (सूरा इमरान, आयत न. 142)

अल्लाह फ़रमाता : ज़रूर हम तुम्हें आज़माएंगे कुछ डर और भूख से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से और खुशख़बरी सुना उन सब्र वालों को(सूरा बक़रह, आयत न. 155)

अल्लाह फ़रमाता : क्या इस गुमान (भ्रम) में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर अगलों की सी रूदाद (वृतांत) न आई पहुंची उन्हें सख़्ती और शिद्दत (कठिनाई) और हिला हिला डाले गए यहाँ तक कि कह उठा रसूल और उसके साथ के ईमान वाले, कब आएगी अल्लाह की मदद सुन लो बेशक अल्लाह की मदद क़रीब है (सूरा बक़रह, आयत न. 214)

अल्लाह फ़रमाता : लोगों के लिये आरास्ता की गई उन ख़्वाहिशों की महब्बत,

औरते, बेटे (औलाद) और तले उपर सोने चांदी के ढेर और निशान किये हुए घोड़े और चौपाए और खेती, यह जीती दुनिया की पूंजी है और अल्लाह है जिसके पास अच्छा ठिकाना। *(सूरा इमरान, आयत न. 14)*

अल्लाह फ़रमाता :क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी अल्लाह ने तुम्हारे ग़ाज़ियों का इम्तिहान न लिया और न सब्र वालों की आज़माइश की *(सूरा इमरान, आयत न. 142)*

तर्जमा : वही है जिसने ज़मीन में तुम्हें नायब किया और तुम में एक को दूसरे पर दर्जों बलन्दी दी कि तुम्हें आज़माए उस चीज़ में जो तुम्हें अता की बेशक तुम्हारे रब को अज़ाब करते देर नहीं लगती और बेशक वह ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान हैण *(कंजुल ईमान, सुरह अनाम, आयत न. 165)*

गौर व फिक्र : अल्लाह अज़ाब भी देता है और बख्स भी देता है लेकिन अज़ाब उसे देता है जो गुनाहो से तौबा नही करता है और बख्स उसे देता है जो गुनाहो से सच्ची तौबा करता है

अल्लाह फ़रमाता : बेशक हम ने ज़मीन का सिगार किया जो कुछ उस पर है के उन्हें आज़माएं उन में किस के काम बेहतर हैं (कंजुल ईमान, सुरह कहफ़, आयत न. 7)

हदीस:- हज़रत अबु सईद खुदरी से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दुनिया मीठी और हरी भरी है और यक़ीनन अल्लाह तआला तुमको इसमें दूसरों के पीछे मालिक करेगा। फिर आज़माएगा कि क्या अमल करते हो? लिहाज़ा दुनिया से दूर रहो ! और औरतों से बचो क्योंकि बनी इस्राईल (पिछली उम्मत) का पहला फ़ितना औरतों (बेपर्दगी) ही से हुआ।" (मुस्लिम शरीफ जिल्द 2, पेज 353)

कुरआने करीम इस सुन्नते इलाहिया को इन अल्फाज़ में बयान फरमाता है: तरजमा और बेशक हमने उन से अगलों को जांचा कि ज़रूर अल्लाह सच्चों को देखेगा और जरूर झूठों को देखेगा (सूर अंकबूत)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: तरजमा मोमिन मर्द और औरतों पर वक़्तन फवक़्तन आज़माइश आती रहती है, कभी खुद उस पर कभी उसकी औलाद पर यह मुसीबत आती है और कभी उसका माल तबाह होता है यहाँ तक कि जब वह अल्लाह से मिलता है तो उसके नाम-ए-अमाल में कोई गुनाह नहीं होता।

जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से राज़ी होता है तो उसको आजमाइश में डाल देता है। अगर वह सब्र करे तो अल्लाह तआला उस बन्दे को पसन्द कर लेता है और अगर वह आजमाइश पर राजी हो जाता है तो अल्लाह तआला उसे अपने खास बन्दों में चुन लेता है। (मुकाशिफतुल कुलूब स 525)

शैतान की क़सम और इंसानों से दुश्मनी

खुदा तआला ने शैतान को जब अपनी बारगाह से निकाल दिया और उसे मरदूद व मलऊन कर दिया तो शैतान ने खुदा से कहा कि मुझे क्यामत तक के लिए मुहलत दे, खुदा ने फरमाया अच्छा मैंने मुहलत दी, शैतान ने मुहलत मिलने का वअदा लेकर फिर कसम खाकर कहा कि मैं सीधे रास्ते पर बैठ जाउँगा तेरे बंदों आदम की औलाद को चारों तरफ से घेर लूँगा, इस तरह उन पर सामने से भी हमला कर दूँगा, पीछे से भी, और उन के दाहिने और उन के बाएं से भी उन पर हमला आवर होंगा, और उन्हें तेरे शुक्र गुज़ार बन्दे न रहने दूँगा। खुदा तआला ने फरमाया, मलऊन तू यहाँ से निकल जा! और जा लोगों को बहका, मेरा भी यह एलान है जो तेरे कहे पर चला में उसे भी तेरे साथ जहन्नम में दाख़िल करूँगा। (कुरअन पा:8, रू. 6)

गौर व फ़िक्र : मेरे (मुसन्निफ) ईल्म के मुताबिक शैतान जो चारो तरफ से हमलावार की बात कही उसमें एक तरफ **दौलत** है जिसका लालच देकर मुसलमानों को दीन से दूर कर दिया है , दूसरी **औरत** है जिसके जरिये शैतान मर्दो को गुनाह कराने में कामयाब रहा है खासकर बदकारी , तीसरी **शोहरत यानी खुद को बेहतर समझना या दिखावा** है जिसे अपनावा कर

मुसलमानों को सुन्नत से दूर कर दिया है आज आप देख रहे है, चौथी **ख़्वाहीसात यानी लंबी उम्मीदे** है जिसके वजह से मुसलमान मौत, आाखिरत और अल्लाह को भूल बैठा है ।

शैतान की हथियार:

हदीस : हज़रते अबू उमामा रदीअल्लाहु अन्हु हुजूर से रिवायत करते है कि आप ने इरशाद फरमाया: जब इब्लीस जमीन पर उतरा तो उसने कहा ए मेरे रब ! तूने मुझे जमीन पर उतार दिया और मुझे मरदूदे बारगाह करार दिया, तू मेरे लिए कोई घर मुकर्रर फरमा दे। अल्लाह ने फरमाया तेरा घर पखानागाह (शौचालय) है उसने अर्ज किया मेरे लिए बैठने की जगह मुकर फरमा दे, अल्लाह ने फरमाया: तेरे बैठने की जगह बाजार और रास्ते हैं। फिर उसने अर्ज किया मेरे लिए खाने का सामान मुकर्रर फरमा दे अल्लाह ने फरमाया हर वह खाने की चीज़ जिस पर अल्लाह का नाम ना लिया गया हो (यानी बिगैर बिस्मिल्लाह पढ़े खाये) वह तेरे खाने का समान है। इब्लीस ने फिर अर्ज किया या अल्लाह! मेरे लिए पीने की कोई चीज मुकर्रर कर दे, अल्लाह ने फरमाया हर नशा आवर चीज तेरे पीने का सामान है। इब्लीस ने फिर अर्ज किया मेरे लिए कोई मुअज्जिन (अपने तरफ बुलाने वाला) मुकर्रर कर दे, अल्लाह ने फरमाया बांसुरी, गाना, ढोलक, म्यूजिक और बजाने की चीज़। फिर इब्लीस ने अर्ज किया मेरे लिए किताब मुर्कार कर दे तो अल्लाह ने फरमाया गुदाई (यानी गुदाई के जरिए जो लिखा जाए वो तेरे लिए किताब है) । फिर शैतान इब्लीस ने अर्ज किया मेरे लिए कोई बात मुकर्रर कर दे तो अल्लाह ने फरमाया झूठ। फिर अर्ज किया मेरे लिए रसूल (पैगाम पहुंचाने वाला) मुकर्रर कर दे, तो अल्लाह ने फरमाया काहिन (जादूगर)। फिर इब्लीस ने अर्ज किया मेरे लिए कोई जाल पैदा कर दे, अल्लाह ने फरमाया औरत तेरा जाल है (यानी शैतान औरत के जरिए आसानी से किसी को गुमराह कर सकता है)

इब्रत: इस हदीस से पता चला कि जो शैतान को मिला है वो मुसलमान के लिए नही है जो इस शैतानी समान या काम को अपनाएगा वो शैतान का हो जाएगा

शैतान की ताकत:

हदीस : हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत हैं उन्होंने कहा जब हजरते आदम अलैहिस्सलाम हिदुस्तान की सर जमीन पर उतारे गए उस वक्त हज़रत आदम अलैहिस्सलाम शैतान की तरफ इशारा करते हुए अपने रब से अर्ज किया ए मेरे रब ! तूने उसके और मेरे दरमियान दुश्मनी पैदा कर दी है अगर तू उसके खिलाफ मेरी मदद नही करेगा तो मैं उस पर कादिर (यानी गुनाहो से नही बाच पाऊंगा) ना हो सकूंगा। तो अल्लाह ने फरमायाः मैं तुमसे पैदा होने वाले हर बच्चे यानी हर इंसान के साथ एक फरिश्ता मुकर्रर कर दूंगा, उन्होंने अर्ज किया ऐ रब! उस पर कुछ इजाफा फरमा दे। अल्लाह ने फरमाया जब तक जिस्म में रूह रहेगी उस वक्त तक उसके लिए तौबा का दरवाजा खुला रहेगा। फिर अर्ज किया या इलाही! उस पर कुछ इज़ाफा फरमा दे, तो अल्लाह ने फरमाया मैं एक गुनाह पर एक गुनाह और एक नेकी पर 10 गुना अज्र या जितना मैं चाहूं लिखूंगा। उसके बाद इब्लीस ने बारगाह ए इलाही में अर्ज किया ऐ रब! येह तेरा मुकर्रम बन्दा है, अगर तू इसके खिलाफ मेरी मदद नही फरमाएगा तो मैं उस पर काबू नही पा सकूंगा। तो अल्लाह ने फरमाया आदम के लड़कों के बराबर तेरे भी लड़के होंगे उसने अर्ज किया ऐ रब इस पर कुछ इजाफा फरमा दे। अल्लाह ने फरमाया तू उनकी रगों में खून की तरह दौड़ेगा और उनके ने दिल मे अपना घर (कब्ज़ा) बना लेगा, इब्लीस ने कहा ऐ रब! इस पर कुछ और इजाफा फरमा तो अल्लाह ने फरमायाः

" और उन पर लाम (लश्कर) बीाा ला अपने सवारों और अपने प्यादों का और उनका हराम मालों और बच्चों में साझी (शरीक) हो। *(मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)*

शैतान का तीर

औरत इब्लीस का ऐसा तीर है जो कभी खता नहीं करता : हजरत हसन बिन सालेह ने फरमाया मैंने सुना है कि एक शैतान ने एक औरत से कहा तू मेरा अीाा लश्कर है और तू मेरा ऐसा तीर है जिससे मैं वार करता हूं तो कभी खता नहीं करता और तू मेरी राजदां है और मेरी जरूरत के वक्त तू मेरा पैगाम पहुंचाती है

बेपर्दा औरत को देखना शैतानी काम है

रसूले अरबी सल लल्लाहो अलैहे व सल्लम का फरमाने आलीशान है कि - "औरत पर्दे में रहने की चीज़ है जिस वक़्त वह बे पर्दा होकर बाहर निकलती है तो शैतान उसको झांक-झांक कर देखता है।" यानी बेहया औरत को देखना शैतानी काम है (तिर्मिज़ी जि. 1 सफ़ा 140)

शैतान के कदम है:

अल्लाह फरमाता है: ऐ ईमान वालो शैतान के कदमों पर न चलो, और जो शैतान के कदमों पर चले तो वह तो बेहयाई और बुरी ही बात बताएगा *(सूरह नूर, आयत नं. 21)*

ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे दाख़लि हो और शैतान के क़दमों पर न चलो बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। *(सूरह बकरह, आयत नं. 208)*

इन दोनों आयात में ग़ौर व फ़िक्र : शैतान के कदम मतलब काफिरो यहूदियो, ईसाई, हिदुओं और गैर मुस्लिमो का तरीका है । इन्ही लोगो के तरीके पर चलने से मना किया गया है मगर अफसोस कि आज हम मुसलमान अल्लाह के फरमान को नही मानकर शैतान के कदम पर चल रहे है , पढ़ाई अंग्रेजी मेडियम, लिवास अंग्रेजो जैसा, खाना - पीना अंग्रेजो जैसा, फैसिलिटी अंग्रेजो जैसा, रहन सहन अंग्रेजो जैसा अब भी वक़्त है सुन्नत को अपना लीजिये इल्मे दल़ हासिल कीजिये हक़ीक़त को जानिये हक़ को मानिए।

शैतान की मुखालफत कैसे करे:

चार बातों से परहेज किया जाए

1) फुजूल नज़र (बेकार ईार ऊीार देखने)

2) फुजूल गुफ्तगू

3) फुजूल खाने (जरूरत से ज्याइद खाने)

4) लोगो की फुज़ूल मुलाक़ात से बाज रहना भी शैतान से महफूज का जरिया है इस लिए के शैतान इन चार दरवाजों से इंसान पर मुसल्लत व हमलावर होता है। (जिन्नातों की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन स्युति, पेज 250)

फरमाने गौसे आज़म

शैतान से मुकाबला करने की एक अहम सूरत यह भी है कि अल्लाह के फज़ल के अलावा दुनिया वालों से किसी किस्म की उम्मीद न रखे न दुनिया वालों की मदद की न उनके माल की न उनकी तारीफ की न उनके जत्थे और गिरोह की क्योंकि दुनिया और दुनिया वाले सब शैतान की फ़ौज और उसका गिरोह है। *(गुनियतुतत्तालबीन, बाब 10, पेज 245)*

गौसे आज़म की दुआ :

अल्लाह तआला उस शख्स पर रहम फरमाए जिसने शैतान के खिलाफ किया और गुनाहों से दूर रहा वह दोज़ख़ से बचा, अल्लाह तआला उसको नेकियों की मजीद हिम्मत दे और रहमान के ज़िक्र में हमेशा मसगुल और मशरूफ रखे

(गुनियतुतालबिन, बाब 10)

दुनिया क्या है (दुनिया की हक़ीक़त)

अल्लाह के नज़दीक दुनिया की हक़ीक़त

हदीस : अगर दुनिया की कद्र अल्लाह के नज़दीक एक मच्छर के पर के बराबर होती तो एक घूंट इसमें से काफिर को न देता ज़लील है जलीलों को दी गई, अल्लाह जब से दुनिया बनाया है कभी इसकी तरफ रहमत की नज़र न फरमाई। *(तिर्मिज़ी) (फैजाने आला हज़रत, पेज नंबर 162)*

ग़ौर व फ़िक्र : ऐ गाफ़िल मुसलमान, इस हदीस से पता चला कि दुनिया की अहमियत एक छोटे कीड़े से भी कमतर है, दुनिया का मिसाल मच्छर से दी गयी है , जरा ग़ौर व फ़िक्र कर मच्छर जिस तरह जिस्म का खुन चूसता है ठीक उसी तरह दुनिया भी इंसान का ईमान, रूहानियत सुख चैन छीनती रहती है, मछर को जब तक भगाओगे नही तब तक वो खून चूसता रहेगा और दर्द देता रहेगा उसी तरह दुनिया से जब तक दूर नही भागोगे तब तक दुनिया ईमान, रूहानियत, दिल का चैन छीनती रहेगी।

नोट : मच्छर डंक मार कर खून चूसता है और इब्लीस दुनिया की मुहब्बत के जरीये ईमान छीनता है यानी इब्लीस का डंक यही दुनिया है लिहाज़ा इस दुनिया (दौलत, शोहरत, ख्वाहिशात, लालच) से बचो।

हदीस : दुनिया की रूहानियत आसमान व ज़मीन के दरम्यान फ़िज़ा में मुअल्लक (लटकी हुई है) है फरियाद व ज़ारी करती है और कहती है ऐ मेरे रब तू मुझसे क्यों नाराज़ है, मुद्दतों के बाद इरशाद होता है, "चुप खबीसा" ।*(तिर्मिज़ी) (फ़ैज़ाने आला हज़रत, पेज नंबर 162)*

ग़ौर व फ़िक्र : ऐ दुनियादार मुसलमान, इस हदीस से पता चलता है की अल्लाह दुनियां को ख़बीसा फरमा रहा है, हम सभी जानते है कि खबीस शैतान को कहते है, किसी बुजुर्ग का क़ौल है कि दुनिया शैतान की रखैल है।

नसीहत : अब फैसला कर ले मुसलमान, क्या अब भी इस दुनिया से दिल लगाएगा जो दुनिया ख़बीसा है, ये दुनिया जो शैतान इब्लीस की रखैल है, जिसे तू सब कुछ समझ बैठा है और आख़िरत को भूल बैठा है, क्या तुझे मरना नही है, क्या तुझे हमेशा यही रहना है हालांकि अल्लाह ने मौत को बनाया ताकि यहाँ तुझे रहने न दिया जाए, सिर्फ एक मुद्दत तक वो भी इबादत और आज़माइश के लिए, अब तो गफ़लत से दूर भाग, अब तो दौलत, शोहरत, औरत का चक्कर छोड़ दे, वरना मरने के बाद अल्लाह को क्या जवाब देगा।

हदीस : नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया बेशक अल्लाह तआला के नज़दीक तमाम मखलूक में दुनियाँ सबसे बुरी और काबिले नफ़रत है और अल्लाह तआला ने जब से इसको पैदा फरमाया कभी इस पर नज़रे रहमत

नहीं की। (शुअबुल ईमान-7 / 338)

ग़ौर व फ़िक्र : इस फरमान के मुताबिक अल्लाह के नजदीक दुनिया बुरी जगह है, नफ़रत के लायक है, अल्लाह की रहमत से दूर है तो फिर जो मुसलमान दुनिया से करीब होगा यानि दुनियादार होगा जिसे अल्लाह का इबादत करने के लिए वक़्त नही मिलता वो लोग भी अल्लाह के नजदीक बुरे साबित होंगे, वो लोग भी नफरत के लायक होंगे, वो लोग भी अल्लाह के रहमत से दूर होंगे जैसा कि आज का मुसलमान जिसके पास वक़्त बहुत है लेकिन सिर्फ दुनिया के लिए दीन के लिए नही, गुनाह करने के लिए वक़्त बहुत है लेकिन नेकी करने के लिए वक़्त ही नही मिलता इसीलिए तो आज मुसलमान परेशान है क्योंकि वो अल्लाह और उसके रसूल का नाफ़रमान है, इसलिए तो मुसलमानों पर जुल्म हो रहा क्योंकि वो दीन को छोड़ कर दुनिया को चुना अल्लाह तो सिर्फ दीन को चुनने वालो आनी मोमिन को मदद फरमाता है ।

अल्लाह फरमाता है : न सुस्ती करो और न ग़म खाओ तुम्ही ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो। *(सुरह: इमरान, आयत न 139)*

दुनिया हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नजदीक:

हदीस : हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक मुर्दा बकरी के पास से गुजर हुआ। आप ने फरमाया क्या यह बकरी अपने मालिक को पसन्द है? सहाबए किराम ने अर्ज की इस की बदबू ही की वजह से तो यहां फेंक दिया गया है। आप ने फरमाया बखुदा दुनिया अल्लाह तआला के यहां इस मुर्दा बकरी से भी ज्यादा बेवकार है ।*(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31)*

ग़ौर व फ़िक्र : दुनिया का मिसाल मुर्दा बदबूदार बकरी की तरह है क्यों दिया गया इसलिए कि मुसलमान इस दुनिया से दिल न लगाएं फिर भी दिल लगाए बैठा है पूरा कीमती वक़्त दुनियादारी में गुजार दे रहा है, तौबा कर ले मुसलमान जिस काम के वजह वक़्त नही मिलता तो वो धंधा बदल डाल वरना मौत तुम्हें बदल डालेगी और दुनिया से क़ब्र में पहुँचा देगी।

दुनिया ईसा अलैहिस्सलाम के नजदीक:

हदीस : हज़रते इब्ने हब्स ने कहा: हजरते ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: बेशक शैतान दुनियां के साथ है, माल के साथ उसका मक्र, ख्वाहिशात के वक्त उसकी तेजी और शहवत (लालच) के वक्त उसकी कामयाबी है।*(मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)*

ग़ौर व फ़िक्र : माल (दौलत), ख्वाहिशात और लालच का नाम दुनिया है। हर वो काम और हर वो चीज़ जो आख़िरत से दूर कर दे वो दुनियां है। आज शैतान दौलत का लालच देकर इस दौर के मुसलमानों से अल्लाह का नाफरमानी करवा रहा है।

हदीस : हज़रते सईद बिन अब्दुल अजीज ने बयान किया कि हजरते ईसा बिन मरियम अलैहिमुस्सलाम ने इब्लीस की जानिब देखा और फरमाया: ये दुनियां का सरदार है, दुनियां की जा निब निकला और दुनियां ही मांगा, दुनियां की किसी चीज में मैं उसे शरीक नहीं करूंगा हत्ता की उस पत्थर में भी जिसे मैं अपने सर के नीचे रखता हूं और मैं जब तक दुनिया में रहूंगा कभी हंसुगा नही । *(मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)*

ग़ौर व फ़िक्र : इस फरमान के मुताबिक इब्लीस ने जितनी भी इबादत की, जन्नत और सातो आसमान में उसका बदला यही दुनियां है यानी दुनिया शैतान की है और ईमान वाले इस दुनियां मे आज़माइश के लिए है।

हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम का फरमान है कि दुनिया को मअबूद बना कर उसके बन्दे न बन जाओ। अपना खजाना उस जात के यहां जमा करो जो किसी की कमाई को बरबाद नही करता। दुनियावी खज़ानों के लिए तो ख़ौफे हलाकत होता है मगर जिसके खजाने खुदा के यहां जमा हो वह कभी तबाह नही होंगे। आपने

आगे फरमाया ऐ मेरे साथियो! मैंने दुनिया को औंधे मुंह डाल दिया है तुम मेरे बाद कही उसे गले न लगा लेना। दुनिया की सब से बड़ी बुराई यह है कि उस में आदमी अल्लाह का नाफरमान बन जाता है और उसे छोड़े बगैर आखिरत की भलाई नामुमकिन है। दुनिया में दिलचस्पी न लो, उसे इबरत की निगाह से देखो और

बा-खबर रहो। दुनिया की मुहब्बत हर बुराई की असल है और एक लम्हा की ख़्वाहिशे नफ्सानी अपने पीछे लम्बी शर्मिन्दगी छोड़ जाती है और फरमाया कि दुनिया तुम्हारे लिए सवारी बनाई गई और तुम उस की पीठ पर सवार हो गये तो अब बादशाह और औरते तुम्हें उस से न उतार दें। रहा बादशाहों का मुआमला तो उन से दुनिया की वजह से मत झगड़ो, वह तुम्हारी दुनिया और तुम्हारी छोड़ी हुई चीजों को तुम्हें वापस न करेंगे। रही औरतें तो उनके नमाज़ रोजे से होशियार रहो। *(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31)*

दुनिया की मुहब्बत सब से बड़ा गुनाह है :-

अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ वही की ऐ मूसा! दुनिया की मुहब्बत में मशगूल न होना, मेरी बारगाह में इस से बड़ा कोई गुनाह नहीं है। रिवायत है कि हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम एक रोते हुए शख़्स के पास से गुजरे, जब आप वापस हुए तो वह शख़्स वैसे ही रो रहा था, मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया या अल्लाह! तेरा बन्दा तेरे डर से रो रहा है, अल्लाह तआला ने कहा, ऐ मूसा! अगर आँसू के रास्ते उस का दिमाग़ बाहर निकल आए और उसके उठे हुए हाथ टूट जायें तब भी मैं उसे नहीं माफ करूँगा, क्योंकि यह दुनिया से मुहब्बत रखता है। *(मुकाशिफतुल कुलूब, बाब 31)*

दुनिया की मुहब्बत तमाम गुनाहों का जड़ है :-

हदीस : दुनिया की मोहब्बात तमाम गुनाहों का जड़/असल है।

दुनियादारी या आखिरत की तैयारी?

हज़रत अली (रदीअल्ल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं : **"बेशक दुनिया और अख़िरत की मिसाल ऐसी है जैसे एक शख़्स की 2 बीवीयां है एक को राज़ी करता है तो दूसरी रूठ जाती है"।**

यानी दुनियां से मोहब्बत करता है तो आख़रित छूट जाती है और आख़रित से मोहब्बत करता है तो दुनियां छूट जाती है। अब फैसला कर ले किससे मोहब्बत करना चाहता है फानी दुनियां से या बाक़ी रहने वाली आख़िरत से।

अगर आख़िरत से मोहब्बत करना चाहता है तो दुनियादारी से दूर हो जा दौलत की मोहब्बत दिल से निकाल दे फिर इबादत को अपना ले, शोहरत की मोहब्बत दिल से निकाल दे और सुन्नत को अपना ले इंशाल्लाह कामयाब हो जाएगा।

गफ़लत (दुनियादारी) किसे कहते है

गफ़लत का लुग्वी माना भूलना, बेख़बर और बेपरवाह हो जाना है, शरीयत में गफ़लत का माना है अल्लाह को भूलना, दुनिया के लिए आख़िरत को भूलना, ज़िदगी के लिए मौत को भूलना, दौलत के लिए इबादत को भूलना, शोहरत के लिए सुन्नत से बेख़बर होना।

अल्लाह फरमाता है: उन जैसे न हो, जो अल्लाह को भूल बैठे तो अल्लाह ने उन्हें बला में डाला*(सूरह हस्र, आयत न. 19)*

अल्लाह फरमाता है : जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया और दुन्या की ज़िन्दगी ने उन्हें फरैब दिया तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे जैसा उन्होंने इस दीन (आख़िरत) के मिलने का खयाल छोडा था। *(सुरह अराफ़, आयत न. 51)*

अल्लाह फरमाता है : **अपने रब को अपने दिल मे याद करो , ज़ारी (रोकर) और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुबह और शाम और ग़ाफ़िलों मे न होना** (सुरह : आराफ़, आयत न. 205)

दुनियादार (ग़ाफ़िल) कौन

अल्लाह फ़रमाता है : बेशक हमने जहन्नम के लिये पैदा किये बहुत जिन्न और आदमी वो दिल रखते हैं जिन में समझ नही और वो आँखें जिन से देखते नही और वो कान जिन से सुनते नही वो चौपायों की तरह है बल्कि उनसे बढ़कर गुमराह वही ग़फ़लत में पड़े हैं (कंजुल ईमान सुरह :, अराफ, आयत न. 179)

ग़ाफ़िल मुसलमान का पहचान :

जो दुनिया के कामो में वक़्त देता हो लेकिन दीन के कामो में वक़्त नही दे पाता हो, जो गुनाह करने में आगे हो लेकिन नेकी करने में बहुत पीछे हो, जो दुनयावी बातो में ज्यादा मशगूल रहता हो और दीन के कामो में शुस्त रहता हो, जो जहालत को पसंद करता हो और ईल्म का अहमियत न देता हो, जो मजे के लिए ज़िन्दगी गुज़रता हो, जो दौलत कमाने का फ़िक्र में रहता हो वही ग़ाफ़िल

ग़ाफ़िल इंसान शैतान का साथी है

अल्लाह फरमाता है : **जिसे रतौंद आए रहमान के ज़िक्र से हम उस पर एक शैतान तैनात करें कि वह उसका साथी रहे** *(सुरह: जुखरूफ़, आयत न. 36)*

मुसलमान गाफिल कब बनता है यानि अल्लाह को कब भूलता :

अल्लाह फ़रमाता है: तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा तलबी (लालच) ने , यहाँ तक कि तुमने क़ब्रों का मुंह देखा (यानी मर गया) हाँ हाँ जल्द जान जाओगे (आख़िरत में), फिर हाँ हाँ जल्द जान जाओगे, हाँ हाँ अगर यक़ीन का जानना चाहते तो (अगर हक़ीक़त जानने का कोसिस करते) तो माल की मोहब्बत न रखते (सुरह: तकासुर, आयत न 1-5)

ग़ाफ़िल मुसलमान नुकसान में

अल्लाह फ़रमाता है: ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें, अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वही लोग नुक़सान में हैं (सुरह: मुनाफिकीन, आयत न 9)

दुनियादार (ग़ाफ़िल) मुसलमान

हदीसे कुद्सी में आया है कि अपनी इज्ज्त व जलाल और सख़ावत व बुजुर्गी की कसम मैं हर उस उम्मीदवार की उम्मीद को ना उम्मीदी से मुन्कतअ कर दूंगा जिस ने मेरे सिवा गैर से आस लगाई। पस ज़रूर उस शख़्स को लोगों के दर्मियान

ज़लील करूंगा और अपने कुर्ब से दूर कर दूंगा और उससे अपना रिश्ता मुन्कतअ कर दूंगा, क्या वह मुसीबतों में गैर से उम्मीद लगाये बैठा है हालांकि मसाएब मेरे हाथ में हैं, तो बन्दा मेरे गैर से आस लगाता है और गौर व फिक्र के बाद दूसरों के दरवाज़े खटखटाता है हालांकि वह दरवाज़े बन्द हैं और उनकी कुंजियां मेरे कब्ज़े में हैं, जो बन्दा मखलूक को छोड़ कर मुझे पकड़ता है उसके उस इरादे को मैं उस के दिल और उसकी नीयत से मालूम कर लेता हूं और तमाम आसमान और ज़मीन और सारी कायनात भी अगर मेरे ऐसे बन्दे पर अपना दाव चलाते हैं तो मैं उसको उस दाव से निकलने का रास्ता दे देता हूं और उसको पनाह देता हूं और जो शख़्स मुझे छोड़ कर मखलूक का दामन थामता है तो मैं आसमान से उसकी रस्सियां काट देता हूं और उसके नीचे से ज़मीन को खीच देता हूं और फिर दुनिया में उसको दुखी बना देता हूं और वह तबाह हो जाता है।ण*(गुनियतुत्तालिबीन)*

गफ़लत के साथ इबादत नामक़बूल

अल्लाह की इबादत या मखलूक की इबादतः एक शख्स ने नमाज शुरू की, जब इय्या- क नअबूदु पढ़ा तो उसके दिल में ख्याल आया कि मैं खालिसतन अल्लाह ही की इबादत कर रहा हूं। गै़ब से आवाज़ आई तूने झूट बोला है तू तो मखलूक की इबादत करता है, तब उस ने मखलूक से नाता तोड़ लिया और नमाज शुरू की, जब फिर उसी आयत तक पहुंचा तो वही दिल में गुजरा, फिर निदा आई तू अपने माल की इबादत करता है, उस ने सारा माल राहे खुदा में खर्च कर दिया और नमाज की नीयत की, जब उसी आयत पर पहुँचा तो फिर ख्याल आया कि मैं हकीकत में अल्लाह की इबादत करने वाला हू। निदा आई तुम झूटे हो, तुम अपने कपड़ों की इबादत करते हो, उस वक्त उस अल्लाह के बन्दे ने बदन के कपड़ों के इलावा सब कपड़े अल्लाह के रास्ते में लुटा दिए, अब जो नमाज में उस आयत पर पहुँचा तो आवाज़ आई कि अब तुम अपने दावे में सच्चे हो ।' (मुकाशिफतुल कुलूब, बाब 6 , 62)

ग़ाफिल (दुनियादार) का अंजाम

हिकायत : जनाब अम्मार बिन सईद रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हजरते ईसा अलैहिस्सलाम का एक ऐसी बस्ती से गुजर हुआ जिसके रहने वाले मुख्तलिफ

अतराफ और रास्तों पर मुर्दा पड़े हुए थे, आपने अपने हवारियों से फरमाया, यह लोग अल्लाह तआला की नाराज़गी का शिकार हैं वरना इन्हें जरूर दफन किया जाता। हवारियों ने अर्ज की हम चाहते हैं कि हमें उनके हालात का पता चल जाये। हजरते ईसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से दुआ माँगी तो अल्लाह तआला ने फरमाया जब रात आ जाये तो इन से पूछना, यह अपनी हलाकत की वजह बतायेंगे, जब रात हुई तो हजरते ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ बस्ती वालो! एक आवाज आई लब्बैक या रुहुल्लाह! आपने पूछा तुम्हारी यह हालत क्यों है और इस अंजाब के नुजूल की वजह क्या है? जवाब आया हमने आफियत की ज़िन्दगी गुज़ारी और जहन्नम के मुस्तहिक करार पाये, इस लिए कि हम दुनिया से मुहब्बत रखते थे और गुनाहगारों की पैरवी किया करते थे। आपने पूछा तुम्हें दुनिया से कैसी मुहब्बत थी? जवाब आया जैसे माँ को बच्चे से मुहब्बत होती है। जब हमारे पास दुनिया आ जाती तो हम बहुत ही खुश होते और जब दुनिया चली जाती तो हम निहायत ग़मगीन हो जाते। आपने फ़रमाया क्या वजह है। कि सिर्फ तू ही जवाब दे रहा है और तेरे बाकी साथी खामोश हैं। जवाब मिला ताकतवर पुर-हैबत फरिश्तों ने उनको आग की लगामें डाली हुई हैं, आपने फरमाया फिर तू कैसे जवाब दे रहा है? जवाब मिला में उन में रहता जरूर था मगर उन जैसी बद-आमालियाँ नहीं करता था। जब अज़ाबे इलाही आया तो मैं भी उसकी लपेट में आ गया अब मैं जहन्नम के किनारे पर लटका हुआ हूँ। क्या खबर इस से नजात पाता हूँ या इस में गिर जाता हूँ। हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने साथियों से फरमाया नमक से जौ की रोटी खाना, फटा पुराना कपड़ा पहनना और कूड़े के ढेर पर सो जाना, दुनिया व आखिरत की भलाई के लिए बहुत उम्दा है।ण (मुकाशिफतुल कुलूब, बाब 31, 193)

हंसो कम, ज़्यादा रोओ

हदीस शरीफ़ ज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि एक दिन मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मस्जिदे करीम से बाहर तशरीफ़ लाए तो कुछ लोगों को देखा कि हंस हंस कर बातें कर रहे थे तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन के पास ठहर गए उन्हें सलाम किया और उन से फ़रमाया कि दुनिया की तमाम लज्जतों को मुनक़तअ करने वाली (मौत) को अकसर याद किया करो। फिर एक मर्तवा आप का गुज़र एक ऐसी

जमाअत से हुआ जो हंस रहे थे तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन्हें देख कर फ़रमाया वल्लाह अगर तुम वह जानते जो मैं जानता हूँ तो तुम कम हंसते और ज्यादा रोते। (हिलयतुल औलिया, जि. 9. स. 263)

रोना न आए तो रोने जैसा चेहरा बना लो

हदीस शरीफ़ शाहे तैबा का इरशाद है कि कुरआन पढ़ो और रोओ (यानी नमाज पढ़ो और रोओ, दुआ मांगो और रोओ, ज़िक्र करो और रोओ) अगर रोना न आए तो रोने जैसा चेहरा बनाओ। (इब्ने माजह, स. 309)

मौत को याद करने वाला शहीदों के साथ होगा

हदीस शरीफ़ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने पूछा : या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) किस का हश्र शहीदों के साथ होगा ? तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया हां जो शख्स दिन रात में बीस मरतबा मौत को याद करता है, वह शहीदों के साथ उठाया जाएगा। (मुकाशिफतुल कुलूब, पेज 186)

हदीस : हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है- उन्होंने कहा, नेकी का हुक्म देते रहना और बुराई से रोकते रहना, नहीं तो अल्लाह तआला तुम पर ऐसे हाकिम मुर्कार कर देगा जो तुम्हारे बुजुर्गों का एहतेराम नहीं करेगा, तुम्हारे बच्चों पर रहम नहीं करेगा, तुम्हारे बड़े बुलायेंगे लेकिन उन की बात नहीं मानी जायेगी, वह मददगार तलब करेंगे मगर उन की मदद नहीं की जाएगी और वह बख़्शिश तलब करेंगे मगर उन्हें नहीं बख़्शा जाएगा।*(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 15)*

ग़ाफिल (दुनियादार) नमाज़ का चोर है

हदीस शरीफ में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स नमाज में से कुछ चुराता है वह बदतरीन चोर है, सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कोई नमाज़ की चोरी कैसे कर सकता है, हुजूर ने इरशाद फरमाया रूकूअ व सुजूद को जल्दी जल्दी अदा करना नमाज की

चोरी है. *(गुनियतुत्तालिबीन, 590)*

जन्नत से महरूम (दूर) रहने वाले लोग

हज़रत अदी बिन हातिम की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि कयामत के दिन चन्द दोज़ख़ियों को जन्नत की तरफ ले जाने का हुक्म होगा जब यह दोज़खी जन्नत के करीब पहुंचेंगे और उसकी खुशबू सूंघेंगे वहां के महल्लात देखेंगे और उन चीज़ों का मुशाहिदा करेंगे जो अल्लाह तआला ने बहिश्त वालों के लिए तय्यार की हैं तो यकायक निदा आएगी कि उसको वापस कर दो उनका यहां से कोई हिस्सा नही है उस वक्त वह ऐसी हसरत व पशेमानी के साथ वापस होंगे कि ऐसी हसरत व पशेमानी से कभी न लौटे होंगे उस वक्त वह (हसरत के साथ) कहेंगे परवरदिगार तूने अपने दोस्तों के लिए जो नेमतें फराहम की हैं वह अभी हम ने तमाम व कमाल देखी भी नही थी कि हम को दोज़ख़ में दाखिल कर दिया गया (हमको वह नेमतें पूरी देखने को मिल जाती) जवाब में अल्लाह तआला फरमाएगा मेरी यही मशीयत थी तुम तन्हाई में तो मेरे सामने और लोगों के सामने अपनी पारसाई (तकवा) का दावा करते थे और उनके सामने आजजी और तवाजो का इजहार करते थे, तुम्हारे दिलों में उसके खिलाफ़ होता था, तुम लोगों से तो डरते थे लेकिन मेरा ख़ौफ तुम को नही आया, तुम लोगों को बड़ा समझते थे लेकिन मुझे बड़ा नही जाना तुमने लोगों की वजह से बुरे काम तर्क कर दिए लेकिन मेरे डर से बुरे कामों को तर्क नही किया इसलिए आज में अपने अजीम सवाब से तुम को महरूम रखूंगा और अपना अज़ाब तुम पर मुसल्लत करूंगा।*(गुनियतुत्तालिबीन ,508)*

आखिरत में वो लोग बड़े ख़सारे (घाटे) में रहेंगे

<u>अल्लाह फ़रमाता है</u> : जो लोग दुनियाँ की ज़िन्दगी और उसकी आराइश चाहता है हम उसे दुनियाँ में पूरा फल देंगे और कुछ भी कमी न करेंगे लेकिन आखिरत में उनका कोई हिस्सा नही होगा और उनके लिये आग (जहन्नम) है और उनके आमाल जो वहाँ (दुनिया मे)करते थे सब अकारत (बर्बाद) गये। *(सुरह हूद, आयत न. 15-16)*

ग़ौर व फ़िक्र: ऐ गाफिल बन्दे, जरा सा कीमती वक़्त निकाल कर सोच तू जो दुनियावी शोहरत पाने के लिए और दुनिया के लोगो को दिखाने के लिए काफिरो का तरीका को अपनाकर अपने आक़ा का सुन्नत को छोड़ दिया है, इसका अंजाम भी जानने की कोशिश कर।

हदीसे कुद्सी (शोहरत वाले मुसलमान जहन्नम में जायेगा)

हज़रत अबू हुरैराह रज़ अल्लो अन्हो से रिवायत है की इन्होंने रसूल अल्लाह सल्ल अल्लाहो अलैहे वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना : क़यामत के दिन सबसे पहले जिस शख़्स के खिलाफ फ़ैसला सुनाया जाएगा..

(1) वह शख़्स होगा जो दुनिया में शहीद हुआ होगा। इसे अल्लाह ताला के सामने लाया जाएगा अल्लाह त'आला इसे अपनी नेयमतें याद दिलायेगा । वह इनका ऐतेराफ करेगा अल्लाह ताला इस से पूछेगा की तूने मेरी नेयमतों का क्या हक़ अदा किया ? वह जवाब देगा की ऐ अल्लाह मैं तेरे रास्ते में जिहाद करता रहा यहाँ तक के शहीद हो गया अल्लाह ताला फरमाएगा की तुम झूठ कहते हो, तुम ने तो जिहाद इस लिए किया था के लोग तुम्हे ज़राये तमंद (करेजियस) और बहादुर कहें। सो वह दुनिया में कहा जा चुका .. फिर इस के बारे में हुक्म दिया जायेगा और इसे मुँह के बल घसीट कर जहन्नुम में डाल दिया जाएगा।

(2) वह शख़्स होगा जिसने इल्म दीन और कुरआन करीम की तालीम हासिल की होगी और दूसरों को इसकी तालीम दी होगी इसे अल्लाह के सामने लाया जाऐगा। अल्लाह ताला इसे अपनी ईनामात याद दिलायेगा, वह इन सब का अयेतेराफ़ करेगा अल्लाह ताला इससे पूछेगा की तूने मेरे ईनामात् का क्या हक़ अदा किया ? वह जवाब देगा की अए अल्लाह! मैंने इल्म दीन और कुरआन करीम की तालीम हासिल की और आपकी खुशनूदी के हुसूल के लिए दूसरों को तालीम दी द्य अल्लाह ताला फरमाएंगे तुम झूठ केहते हो, तुम ने तो इस लिए इल्म हासिल किया था की लोग तुम्हे बड़ा आलिम कहें और कुरआन करीम इस लिए पढ़ा था के लोग तुम्हे बड़ा कारी कहें। सो वह दुनिया में कहा जा चुका, फिर इस के बारे में हुक्म दिया जाऐगा और इसे मुँह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाऐगा।

(3) वह शख़्स होगा जिस पर अल्लाह ने वुसअत की होगी और हर किस्म का माल

व दौलत इसे अता किया होगा। इसे अल्लाह ताला के सामने लाया जायेगा अल्लाह ताला इसे अपने ईनामात की याद दिहानी कराएंगे। वह इन सब का अयेतेराफ़ करेगा द्य अल्लाह ताला फ़रमाऐगा के तूने इन ईनामात का क्या हक़ अदा किया ? वह जवाब देगा की अए अल्लाह! मैंने कोई रास्ता ऐसा नही छोड़ा जहाँ तुझे खर्च करना पसंद हो और मैंने ख़र्च ना किया हो। अल्लाह ताला फ़रमायेगा"तुम झूठ कहते हो तुम ने तो इस लिए खर्च किया था के लोग तुम्हे सखी कहें। सो वह कहा जा चुका फ़िर इस के बारे मैं भी हुक्म दिया जायेगा और इसे मुँह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जायेगा।*(मुस्लिम, तिर्मिज़ी, निसाई)*

हदीसे कुदसी 'अल्लाह इर्शाद फ़रमाता है :'

ऐ इन्सान !

तअज्जुब है उस शख़्स पर जो मौत पर यकीन रखता है फिर भी खुश होता है।

तअज्जुब है उस पर जो हिसाबो किताब पर यक़ीन रखता है फिर भी माल जम्अ करने में मसरूफ़ है ।

तअज्जुब है उस पर जो क़ब्र पर यकीन रखने के बा वुजूद हंसता है।

तअज्जुब है उस पर जिसे आख़रित पर यकीन है फिर भी पुर सुकून है।

तअज्जुब है उस पर जो दुन्या (की हक़ीक़त को जानता) और उस के ज़वाल पर यकीन रखता है फिर भी इस पर मुत्मइन है ।

तअज्जुब है उस पर जो गुफ्तगू तो आलिमों जैसी करता है लेकिन उस का दिल जाहिलों जैसा है।

तअज्जुब है उस शख़्स पर जो पानी के जरीए पाकी तो है हासिल करता है मगर उस का दिल आलूदा है।

तअज्जुब है उस पर जो लोगों के उयूब तलाश करने में तो मसरूफ़ रहता है लेकिन अपने उयूब से ग़ाफ़िल है ।

तअज्जुब है उस शख्स पर जो जानता है कि अल्लाह मेरे हर अमल से बा ख़बर है फिर भी उस की ना फ़रमानी करता है ।

तअज्जुब है उस पर जो जानता है कि उसे अकेले मरना, अकेले क़ब्र में दाखिल होना और अकेले ही हिसाब देना है फिर भी लोगों से उन्सियत रखता है

(ऐ इब्ने आदम ! सुन !) मैं ही मा' बूदे हक़ीक़ी हूं और मुहम्मद मेरे ख़ास बन्दे और रसूल हैं। (मजमुआ रसायल, इमाम ग़ज़ाली)

दुनिया मोमिन के लिए क़ैदखाना:

दुनिया मोमिन के लिए क़ैदखाना और काफिर के लिए जन्नत है *(सही मुस्लिम)*

नसीहत : ऐ ग़ाफील, अपने आक़ा का इस फरमान को न भूल और अपने आप को भी न भूल अगर तू मोमिन है तो इस दुनिया मे क़ैदी की तरह ज़िन्दगी गुजार यानी बिना फैसिलिटी वाली, बिना आरज़ू वाली, बिना खाहिस वाली जैसा कि दुनिया के क़ैदख़ाने में क़ैदी ज़िन्दगी गुज़रता है । अगर तू इस दुनिया मे काफिर की तरह ज़िन्दगी गुज़ारेगा तो समझ ले तुझे जन्नत का मज़ा इसी दुनिया मे दे दिया जाएगा और आख़िरत में जन्नत में जगह न दिया जाएगा जैसा कि उपर (सुरह हूद, आयत न. 15-16) में फ़रमाया गया। रही आमाल की बात जो तू जुमा-जुमा, रमज़ान - रमज़ान में करता है बाकी दिन दुनिया यानी काफिर का जन्नत में मौज मस्ती करता है, कभी दौलत के चक्कर मे, कभी औरत के चक्कर मे, कभी शोहरत के चक्कर मे, यकीन कर तेरा वो जुमा और रमज़ान वाला आमाल बर्बाद बर्बाद बर्बाद।

दुनियादार मुसलमानों की अल्लाह मदद नही करता:

"यही लोग हैं जिन्होंने खरीद ली आखिरत के बदले दुनिया की जिन्दगी तो उनसे ना आजाब हल्का किया जाएगा और ना वह (उसे) मदद किए जाएंगे" ण *(सुरह: बकरा, आयत न 86)*

पिछली उम्मत की हलाकत की वजह दुनिया की मोहब्बत है:

फ़रमाने नबवी है दुनिया सब्ज़ (खुश आइन्द) और मीठी है। अल्लाह तआला ने

तुम्हें अपना ख़लीफा बना कर भेजा है और वह तुम्हारे आमाल से बा-ख़बर है। बनी इस्राईल पर जब दुनिया फ़राख़ कर दी गई तो उन्होंने अपनी सभी कोशिशें, जेवरात, कपड़ों, औरतों और इतरियात के लिए वक्फ कर दी थी। (और उनका अंजाम तुम ने देख लिया यानी नामों निशान नहीं है)

(मुकाशफतुल , बाब 31, पेज 188)

इन्सान बड़ी भूल और एक अजीम गफलत में है

फरमाने गौसे आज़म : तुम्हारी इस गफलत और इस भूल पर बड़ा ताज्जुब है कि दिन और रात की हर घड़ी तुम्हारी ज़िन्दगी कम हो रही है, तुम को मौत की तरफ हंकाया जा रहा है पस मौत से डर और उस अजीम ख़तरे से जो तुझ पर छाया हुआ है, गाफिल मत हो, मौत का मज़ा बिल आखिर तुम्हें चखना है, तुम्हें सब कुछ छोड़कर खाली हाथ इस दुनिया से जाना है मुमकिन है सुबह या शाम मौत तेरे घर डेरे डाल दे और उस का रूख़ तेरे मकान की जानिब हो जाए. आख़िर सब कुछ छीन कर तुझे यहां से निकाला जाना ही है फिर तेरा रूख ख्वाह दोज़ख़ की तरफ हो या जन्नत की तरफ (इस की तुझे ख़बर नही) दोजख की हकीकत उसके अज़ाब की मिकदार और तरह तरह के अज़ाबों का जानना और समझना ना मुमकिन है, वह तहरीर के इहाते और रिवायत के दायरे में नही आ सकते। *(गुनियतुत्तालिबीन , 592)*

दुनियादार मुसलमान के दिल मे शैतान का कब्ज़ा :

हज़रते अबू उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मबऊस फरमाया गया तो शैतान अपने लश्कर के पास आया, उन्होंने शैतान से कहा एक नबी मबऊस हुआ है और उस के साथ उस की उम्मत (मुसलमान) भी है। शैतान ने पूछा क्या वह लोग दुनिया (दौलत, शोहरत और औरत) को पसन्द करते हैं? उन्होंने कहा हां, शैतान ने कहा कि फिर तो कोई परवाह नही, अगर वह बुतों को नही पूजते तो न पूजें, हम उन्हें तीन बातों में फंसायेंगे।

1. दूसरे की चीज ले लेना (अमानत में खयानत, जैसे चोरी, जमीन या माल में कब्जा, नाप तौल में कमी, मजदूर का पैसा खा जाना, झूठ बोलकर तिज़ारत करना),

2. दुनियावी समान पर पैसा खर्च करा कर (यानी शैतान के राह में पैसा ख़र्च करना)

3. लोगों के हुकूक़ अदा न करना, यही तीन चीजें तमाम बुराईयों की बुनियाद है।

(मुकाशफतुल , बाब 31, पेज 201)

दुनिया धोका देती और ज़रर (तकलीफ़) पहुंचाती है

हुजूर सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि दुनिया धोका देती है गुज़र इन से और मुज़रत रसां हैं। अल्लाह तआला का इरशाद है कही तुम को दुनियवी ज़िन्दगी फरेब में न डाले, कही फरेब देने वाला शैतान तुम्हें अल्लाह के साथ फरेब में मुबतला न कर दे। पस अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो, नमाज़ और दूसरे अहकाम की इताअत करो, ममनूआत से बचो, ज़ाहिरी और बातिनी गुनाहों को छोड़ दो, अल्लाह किसमत में जो कुछ लिख दिया है जितना रिज्क मुक़द्दर कर दिया है उस पर राजी और शुक्र करते रहो, अपने रब के हुक्म और मनाही के पाबन्द रहो और उसके फरमा बरदार बन जाओ। जिस काम के इरतेकाब से मना किया है उस हुक्म से न भागो (ममनूआत से बचो) तुम्हारी मर्जी के ख़िलाफ़ रिज्क की जो तक़सीम की गई है और बहुत से ऐसे काम हैं जिन को तुम पसन्द नही करते उनके मसालेह तुम को मालूम नही और उनका अंजाम तुम से पोशीदा है उनका अज तुम पर जाहिर नही पस तुम अल्लाह की तदबीरों पर एतराज करके उसकी नाखुशी के सजावार मत बनो*(गुनियतुत्तालिबीन , 592)*

अल्लाह तआला का इरशाद है, : बसा औकात तुम किसी चीज़ को बुरा जानते हो हालांकि तुम्हारे लिए बेहतर वही है और बसा औकात तुम किसी शयं को अच्छा समझते हो हालांकि यह तुम्हारे लिए बुरी होती है, अल्लाह तआला सब हकाएक का आलिम है और तुम नही जानते।

तुम हमेशा अपने मौला के फरमा बरदार और उसके फैसले पर राजी और उसकी

भेजी हुई मुसीबत पर साबिर और उसकी नेमतों पर शुक्र गुज़ार रहो उसके नाम से उसकी नेमतों और उसकी कुदरत की निशानियों का जिक्र करके उस से दुआ करो और उसके काम और उसकी मशीयत और उसके इन्तिजाम पर नुक्ता चीनी न करो उस वक्त तब उस पर अमल पैरा रहो कि मौत आ जाए। नेक लोगों के साथ मरना और अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के साथ तुम्हारे हश्र हो, रब्बुल आलमीन की रहमत और उसके करम से तुम को भी जन्नत में दाखिला मिल जाए।

दुनियादार के लिए आख़िरत में जगह नही

अल्लाह फरमाता है : जो आख़िरत की खेती (नेयमत) चाहे हम उसके लिये उसकी खेती (नेयमत) बढ़ाएं और जो दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ देंगे और आख़रित में उसका कुछ हिस्सा नही ; सूरह - शूरा, आयत नं. 20

दुनियादार की इबादत मकबूल नही:

हदीस : हुजूर सरकारे दो आलम ने फरमायाः क़ियामत के दिन कुछ लोग ऐसे आएंगे कि उन के (नेक) आमाल वादिये तिहामा के पहाड़ों की मानिन्द होंगे, उन के लिये हुक्म होगा कि "इन को जहन्नम में ले जाओ।" सहाबा ने अर्ज की : या रसूलल्लाह ! क्या वोह लोग नमाज़ी होंगे ? फरमायाः हां! वोह लोग नमाजें भी पढ़ते होंगे और रोज़े भी रखते होंगे और रात का कुछ हिस्सा जाग कर अल्लाह की इबादत भी करते होंगे, लेकिन उन में (बुरी) बात येह होगी कि जब दुन्या की कोई चीज़ उन के सामने आती उस पर कूद पड़ते थे । (या'नी हुसूले दुन्या के लिये जाइज़ व नाजाइज़ की परवा न करते थे)*(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31, पेज 206)*

हिकायत :

दुनिया से मुहब्बत रखने वाले की नेकिया काम नही आती

हजरते बिश्र रहमतुल्लाह अलैह से कहा गया कि फला आदमी मर गया है. आपने फ़रमाया उस ने दुनिया को जमा किया और आखिरत को जाया कर दिया, लोगों ने कहा वह तो यह यह नेंकिया किया करता था। आप ने फरमाया जिस के दिल में

दुनिया की मुहब्बत हो उसे नेकी नफा नहीं पहुंचाती। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31, पेज 206)

दुनिया से मुहब्बत रखने वाला नहीं बख़्शा जायेगा

हिकायत : हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम एक रोते हुए शख़्स के पास से गुजरे, जब आप वापस हुए तो वह शख़्स वैसे ही रो रहा था, मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया या अल्लाह! तेरा बन्दा तेरे डर से रो रहा है, अल्लाह तआला ने कहा, ऐ मूसा! अगर आँसू के रास्ते उस का दिमाग़ बाहर निकल आए और उसके (दुआ के लिए) उठे हुए हाथ टूट जायें तब भी मैं उसे नहीं माफ करूँगा, यह दुनिया से मुहब्बत रखता है।*(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31, पेज 196)*

दुनियावी सामान लानत के काबील है

हदीस : दुनियाँ मलउन (लानत के काबिल) है और जो कुछ (दुनियावी सामान) उसमें है वो भी लानत के काबिल है सिवाये उसके जो अल्लाह तआला के लिये है (आख़िरत में काम आने वाला) । (सुनन इब्ने माजा - 312)

दुनियावी सामान इस्तेमाल न करे

हदीस : हज़रत उस्मान रजि. का क़ौल है कि प्यारे आका मदनी सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया है कि "इन चीज़ो के सिवा आदम के बेटे को किसी चीज़ पर कोई हक़ नहीं (1) रहने के मकान (2) तन ढकने को कपड़ा (3) खुश्क रोटी (4) पानी।" (तिर्मिज़ी)

ग़ौर व फ़िक्र : दुनिया की चीजो से मुराद अंग्रेजो का बनाया हुआ समान जैसे इलेक्ट्रोनिक सामान, कम्पुटर, टीवी, मोबाईल, फ्रीज़, वाशिग मशीन, गीज़र, ए. सी., कूलर और इंडक्शन, कार, बाइक, टाइल्स, मार्बल, स्टाइलिस कपड़ा, तरह तरह के खाने का सामान वगैरह आप खुद सोंचे फ़ितने के उस आख़िरी दौर में कौन है जो इन दुनियावी सामानों से बचा है । यानी ऊपर की हदीस के मुताबिक इस दौर का मुसलमान का आमाल कुबूल नही होगा।

ग़ौर व फ़िक्र - आपने पढ़ा होगा या सुना होगा अल्लाह वालो कि सीरत, अल्लाह वाले अक्सर आबादी से दूर वीराने में ज़िन्दगो गुजारते है इसकी वजह सिर्फ यही है कि वो दुनियावी समान से बचे रहे लेकिन अफसोस आज स्कूल और क0लेजों में पढ़ने वाला मुसलमान अपने घरों में दुनियवी (इलेक्ट्रॉनिक) समान भर दिया है यहां तक कि पाखाना गाह जो शैतान का घर है उसे भी अपने घर के अंदर बना लिया है और अंग्रेजी नाम दे दिया है (Attech Laitring Bathroom) यही वजह है कि हिफाज़त के फरिस्ते घर मे दाखिल नही होते और जहां फरिस्ते नही होते वहां शैतान ही शैतान होता है और शैतान इंसान के दुशमन है ये कभी मत भुलना

काफिर का बनाया सामान शैतान का है:

बुजुर्गों का कौल : हज़रते यहिया बिन म'आज रहमतुल्लाहू अलैह का क़ौल है कि दुनिया शैतान की दुकान है, उस में से कुछ न लो, अगर तुम ने कुछ ले लिया तो शैतान तलाश करता हुआ तुम तक पहुंच जाएगा। *(मुकाशफतुल कुलूब, बाब न. 31)*

अल्लाह बहुत मेहरबान है अपने बंदों का भला चाहता है कुरान में फ़रमा दिया है शैतान तुम्हारा दुश्मन है, वो इंसानो को बहकायेगा और आरजुएं (लंबी उम्मीदें) दिलाएगा शैतान जो कहा है उसे अल्लाह कुरान में फ़रमा दिया :

क़सम है मैं (शैतान) ज़रूर उन्हें (इंसान को) बहका दुंगा और ज़रूर उन्हें आरजुऐं दिलाऊंगा। (सुरह: निसा, आयत न. 119)

ग़ौर फ़िक्र : इंसान के 2 किस्मे है 1. मोमिन, 2. काफिर

काफिर के बारे में अल्लाह फ़रमाता है वो शैतान के मददगार है : **काफ़िर अपने रब के मुक़ाबिल शैतान को मदद देता है।** (सुरह: फुरकान, आयत न. 55)

EMI और फाईनेन्श सुविधा काफिरों का चाल है मुसलमानों को आरजुएं दिलाने के लिए और शैतान को मदद पहुचाने के लिए । फैसला आपके हाथ क्या इतना इल्म होने के बावजूद भी दुनियादारी में मशगूल रहोगे या तौबा करके आख़िरत

की तैयारी करोगे

दुनिया की ज़िन्दगी किसके लिये:

अल्लाह फरमाता है : क़ाफ़िर दुनिया की ज़िन्दगी पर इतरा गए और दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले नही मगर कुछ दिन बरत लेना*(कंज़ूल ईमान, सुरह: राअद, आयात न. 26)*

दुनिया और औरत से बचो

हदीसः- हज़रत अबु सईद खुदरी से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः "दुनिया मीठी और हरी भरी है और यक़ीनन अल्लाह तआला तुमको इसमें दूसरों के पीछे मालिक करेगा। फिर आज़माएगा कि क्या अमल करते हो? लिहाज़ा दुनिया से दूर रहो ! और औरतों से बचो क्योंकि बनी इस्राईल (पिछली उम्मत) का पहला फ़ितना औरतों (बेपर्दगी) ही से हुआ।" (मुस्लिम शरीफ जिल्द 2, पेज 353)

हज़रते आदम अलैहिस्सलाम की वसीयत

(दुनिया, औरत, लालच से बचो) हज़रते आदम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे शीस अलैहिस्सलाम को पाँच बातों की वसीयत की और फ़रमाया अपनी औलाद को भी यही वसीयत करना, 1 आरजी दुनिया पर मुतमइन न होना मैं जावेदानी जन्नत में मुतमइन था, अल्लाह तआला ने मुझे वहाँ से निकाल दिया। 2 औरतों की ख़्वाहिशात (दुनियावी बात) पर काम न करना। मैंने अपनी बीवी की ख़्वाहिश पर शजरे ममनूआ खा लिया और शर्मन्दगी उठाई । 3 हर एक काम करने से पहले उस का अंजाम सोच लेता तो जन्नत से न निकाला जाता। 4 जिस काम से तुम्हारा दिल मुतमइन न हो उस काम को न करो क्यों कि जब मैंने शजरे ममनूआ खाया तो मेरा दिल मुतमइन नही था मगर मैं उस के खाने से बाज़ न रहा। 5 काम करने से पहले मशवरा कर लिया करो क्योंकि अगर मैं फ़रिश्तों से मशवरा कर लेता तो मुझे दुनिया में तकलीफ न उठानी पड़ती।*(मुकाशफतुल कुलूब)*

हमारे नबी ﷺ की वसीयत, दुनिया को पूजने वाले लोग

फरमाने नबवी है कि जल्द ही तुम्हारे बाद एक क़ौम आने वाली है जो दुनिया की खुशरंग निअमतें खायेंगे, खुश कदम घोड़ों पर सवार होंगे। बेहतरीन, हसीन व खूबसूरत औरतों से निकाह करेंगे, बेहतरीन रंगों वाले कपड़े पहनेंगे, उन के मामूली पेट कभी नहीं भरेंगे, उन के दिल ज़्यादा दौलत पर भी कनाअत (सब्र) नहीं करेंगे। सुबह व शाम दुनिया को माअबूद समझ कर उस की इबादत करेंगे, उसे अपना रब समझेंगे, उसी के कामों में मगन और उसी की पैरवी में गामजन रहेंगे। जो शख़्स उन लोगों के ज़माना को पाये, उसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वसीयत है कि वह उन्हें सलाम न करे, बीमारी में उन की अयादत न करे, उन के जनाज़ों में शामिल न हो और उन के सरदारों की इज्ज़त न करे, और जिस शख़्स ने ऐसा किया उस ने इस्लाम को मिटाने में उन की मदद की। (मुकाशफुतुल कुलूब, 249)

दौलत का फितना

अल्लाह फरमाता है : उसका माल उसे काम न आएगा जब हलाकत में पड़ेगा *(कुरान, पारा - 30, सूरा लैल, आयात न, 11)*

ग़ौर व फ़िक्र : अगर इस आयत की हक़ीक़त अगर आपको देखना हो तो हॉस्पिटल चले जाएं और उन बीमार इंसान को देखे जिसके पास पैसा है लेकिन डॉक्टर जवाब दे दिया या कब्रिस्तान चले जाएं और उस मुर्दे को देखे जिसके पास पैसा था लेकिन जान नही बचा पाया और बिना तौबा किये मर गया। अफसोस क़ब्र के अंदर उसके साथ किया किया मामला होता होगा।

रिश्ते और औलाद काम न आएंगे

अल्लाह फरमाता है : हरगिज़ काम न आएंगे तुम्हें तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद *(सूरए मुम्तहिनह आयत न. 9)*

रिश्तेदार और दोस्तयार ही बनेंगे हलाकत की वजह:

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि लोगों पर एक ज़माना ऐसा आयेगा कि दीनदार आदमी का दीन सलामत न रहेगा सिवाये उस शख्स के जो अपना दीन बचाने के लिये किसी पहाड़ी की चोटी से दूसरी चोटी पर या एक सुरंग से दूसरी सुरंग में अपने दीन को साथ लेकर भागता फिरे फिर जब ऐसा ज़माना आ जाये तब माअशियत (रोज़ी, वो चीजे़ जिससे ज़िन्दगी बसर की जाये) सिर्फ उन्ही ज़राऐ से हासिल होंगी जिनसे अल्लाह तआला नाराज़ होगा और जब ऐसा ज़माना आ जाये तो उस वक़्त आदमी की हलाकत की वजह उसकी बीवी या उसकी औलाद होगी और अगर किसी की बीवी और औलाद न हुई तो उसके वालिदैन उसकी हलाकत का सबब होंगे और अगर उसके वालिदैन न हुये तो उसकी हलाकत उसके करीबी रिश्तेदार या दोस्त यार के हाथों होगी सहाबा किराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ऐसा क्यों कर होगा तो आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि वो उसे माल की कमी का ताअना देंगे जिसकी वजह से वो माल व दौलत कमाने के लिये खुद को हराम कामों में मुलव्विस कर लेगा जो उसकी हलाकत का वजह होगा। *(अत्तरग़ीब वत्तरहीब-3/299 हदीस-4152)*

दौलत जमा करने वाले नुकसान में?

हजरत अबूजर रजि. से रिवायत है कि मैं सरकारे दो आलम सल लल्लाहो अलैहे व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ आप सल लल्लाहो अलैहे व सल्लम काबा शरीफ के साये में तहरीफ फरमा थे। मुझे देख कर आपने फरमाया "कसम है परवरदिगारे काबा की वह (शख्स) बड़े टोटे (घाटे) में है।"

मैंने अर्ज किया "या रसूलल्लाह मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा हो वह कौन लोग है..." तब आपने फरमाया "माल को ज्यादा जमा करने वाले, मगर (वह लोग नही) जिन्होंने अपने आगे-पीछे और दाये बाये (अच्छे कामों में) खर्च किया और ऐसे लोग कम हैं।" (बुखारी, मुस्लिम)

रुपया जमा करने वाले पर चार मुसीबतों का आना

हजरते अली रजियल्लाहु अन्हु से मरवी है हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब लोग फकीरों से दुश्मनी रखें, दुनियावी शौकत व हशमत का इजहार करें और रुपया जमा करने पर लालची हो जायें तो अल्लाह तआला उन पर चार मुसीबतें नाजिल फरमाता है,1 कहत साली, 2 जालिम बादशाह **(मोदी जैसा)** , 3 खाइन हाकिम और , दुश्मनों की हैबत **(बजरंग दल, शिव सेना ,** RSS)।

लालची मुसलमान

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया मुझे इस बात का डर नही कि तुम मेरे बाद शिर्क (मूर्ति पूजा) करने लगोगे बल्कि इस बात का डर है कि माल कि हिर्स (लालच) में एक दूसरे से आगे बढ़ोगे । (सही बुखारी - 2 / 585)

शैतान का बन्दा :

हज़रते हसन रहमतुल्लाह अलैह का कौल है जिस ने दौलत को इज्जत दी अल्लाह ने उसे जलील किया। कहते हैं जब रुपया पैसा बनता है तो सब से पहले शैतान उन्हें उठा कर माथे से लगा कर चूमता है और कहता है। जिस शख्स ने तुम से मुहब्बत की वह यकीनन मेरा बन्दा है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 38, पेज 250)

दौलत से दुश्मनी :

हजरते अलाअ बिन जियाद कहते हैं मेरे सामने दुनिया तमाम जीनतों से सज कर आई तो मैं ने कहा मैं तेरी बुराई से अल्लाह की पनाह चाहता हूं। दुनिया ने कहा अगर तुम मेरे शर से बचना चाहते हो तो रुपये पैसे से दुश्मनी रखो क्यों कि दौलत और रुपये पैसे हासिल करना दुनिया को हासिल करना है जो उन से अलग थलग रहे वह दुनिया से बच जाता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 38, पेज 250)

....

ग़फ़लत से बेदारी

ऐ ग़ाफ़िलो ! बेदार हो जाओ, ऐ गुनाहों पर क़ाइम रहने वालो ! बाज़ आ जाओ और नसीहत हासिल करो, ... खुदा के वासिते जरा मुझे येह तो बताओ कि इस से बुरा हाल किस का होगा जिसे उस की ख़्वाहिशात ने (फ़िक्रे आखिरत से) दूर कर दिया हो,...... उस से जियादा खसारा पाने वाला कौन होगा जिस ने अपनी आखिरत दुन्या के बदले बेच डाली। येह कैसी ग़फ्लत है जो तुम्हारे दिलों पर छा गई है....... येह कैसी जहालत है जिस ने तुम्हारे ऐबों को तुम्हारी निगाहों से ओझल कर दिया है ?...... क्या तुम अपने इर्द गिर्द मौत की तलवारों को चमक्ते हुए नही देखते हालां कि मौत की आहटें तुम्हारे दरमियान वाकेअ होती रहती हैं और उस की निगाहें तुम पर जमी हुई हैं और उस की आज्माइश तुम्हारे उज़्र को मिटाने वाली हैं और उस के तीर तुम में से बहुत सारों को लग चुके हैं और येह तुम्हें भी घेरे में ले चुकी है....... तो कब तक और किस लिये तुम पीछे रह गए ?... क्या तुम हमेशा बका की तमअ रखते हो ?...... हरगिज़ नही वाहिद व समद की कुसम ! मौत ताक में है येह न किसी बाप को छोड़ती है और न बेटे को । अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए अपने मौला की इबादत में खूब कोशिश करो और गुनाहों से दूर हो जाओ ताकि वोह तुम से महब्बत फ़रमाए ।

अल्लाह बन्दो से कब राज़ी होता है

फरमाने नबवी है कि रहमते खुदावन्दी को उस इन्सान की तौबा से ज़्यादा खुशी होती है जो हलाकत खेज़ ज़मीन में अपनी सवारी पर खाने पीने के सामान लादे सफर कर रहा हो और वहां आराम की ग़रज़ से रुक जाए, वह सर रखे तो उसे नींद आ जाये.. जब सो कर उठे तो उस की सवारी सामान के साथ गाइब हो और वह उस की तलाश में निकले यहां तक कि सख्त गर्मी और प्यास से बद-हाल होकर उसी जगह वापस आ जाये जहां वह पहले सोया था और मौत के इन्तेज़ार में अपने बाजू का तकिया बना कर लेट जाये, अब जो वह जागा तो उसने देखा उस की सवारी सामान के साथ उस के करीब मौजूद है। अल्लाह तआला को बन्दे की तौबा से उस सवारी वाले शख़्स से भी ज्यादा खुशी होती है जिस का सामान जागने के बाद उस को मिल गया है *(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 34, पेज 229)*

बगैर तौबा के मगफिरत नहीं होगी

हुजूर नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः "जो अल्लाह तआला से इस्तिगफार नहीं करता अल्लाह तआला उसे नहीं बख़्शेगा और जो तौबा नहीं करता अल्लाह तआला उसकी तौबा कुबूल नहीं फ़रमाएगा और जो रहम नहीं करता अल्लाह तआला भी उस पर रहम नहीं फ़रमाएगा। *(कन्जुल उम्माल, हदीसः 10284)*

गुनाहों से तौबा हर ग़म और परेशानी से नजात का ज़रिया है

हज़रत अब्दुलाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः जो इस्तिगफार को अपने ऊपर लाज़िम कर ले अल्लाह तआला उसके लिये हर तंगी से छुटकारा और हर ग़म से नजात का रास्ता निकाल देगा और उसे वहाँ से रोजी देगा जहाँ उसका गुमान भी न हो । *(इब्ने माजा, हदीसः 3951)*

तौबा करके रोने वाला नौ जवान

हिकायतः हज़रते सय्यिदुना अबू माजिद फरमाते हैं : "मैं सूफ़िया से बहुत मोंहब्बत रखता था, एक दिन मैं उन के पीछे पीछे एक आलिम की मजलिस में पहुंचा तो मैं ने उस मजलिस में एक नौ जवान देखा जिस की जियारत के लिये लोग बेताब थे। वोह नौ जवान जब "अल्लाह अल्लाह" की सदाएं सुनता तो अपने आंसूओं पर काबू न रख पाता। ऐन आलमे शबाब में उसे इस तरह रोता देख कर बड़ा तअज्जुब हुवा। मैं ने एक बुजुर्ग से उस नौ जवान के बारे में पूछा तो उन्हों ने बताया : "येह तौबा के बाद इस तरह अश्कबारी करता और नवाफ़िल की अदाएगी में मसरूफ़ नज़र आता है, इस का दिल बहुत नर्म है और येह महब्बते इलाही में खुद-रफ्ता है।" *(बहरुददूमूअ)*

एक किताब जरूर पढ़े "**गुनाहों से तौबा**" हिन्दी